₹५ मूल्य

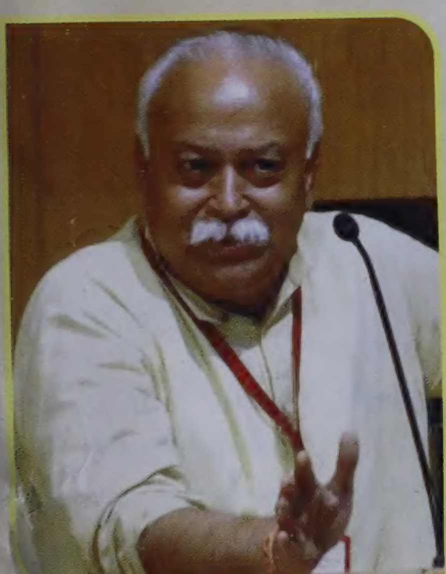
राष्ट्रीय विचारों का सजग पाक्षिक

पाथेय कण

पौष शु. ११, २०७१ ▸ युगाब्द ५११६ ▸ जयपुर ▸ १ जनवरी २०१५



यह धर्मांतरण नहीं घर वापसी है



जो भटक गये उन्हें अवश्य वापस लायेंगे

-सरसंघचालक

अन्दर पढ़ें »

अमर क्रांतिकारी करतार सिंह सराबा



अमर शहीद करतार सिंह सराबा की पूरी गाथा पढ़ी। ऐसे महान देशभक्तों की जानकारी आज के समय में कम ही पढ़ने और सुनने को मिलती है। पाथेय कण ने सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराकर इस कमी को दूर किया है।

-डा.धीरेन्द्र शर्मा, खींवसर (नागौर)

पाथेय कण का १ नवम्बर का अंक पढ़ा। करतार सिंह सराबा पर दी गई जानकारी ने काफी प्रभावित किया। राष्ट्र निर्माण के लिये ऐसे महान देशभक्तों का जीवन चरित्र आज की शिक्षा में शामिल किया जाना चाहिये।

-महेन्द्र सैनी, झोटवाड़ा, जयपुर
-उदयकमल मिश्र, सीधी (म.प्रदेश)

क्रांतिकारी करतार सिंह सराबा के विषय में विस्तारपूर्वक प्रथम बार पाथेय कण में ही पढ़ा। देश की आजादी में अहम भूमिका निभाने वाले ऐसे नायक आज भी हमारे लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

-मेघा सिंघल, धौला, जयपुर

१ नवम्बर का अंक नये कलेवर में बेहद आकर्षक एवं ज्ञानवर्धक लगा। मातृभूमि के लिये अपने प्राण न्यौछावर करने वाले करतार सिंह सराबा जैसे क्रांतिकारियों का जीवन धन्य है। समय-समय पर पाठकों को ऐसे राष्ट्र नायकों से परिचित कराते रहें।

-शास्त्री संदीप भातरा, रींगस (सीकर)
-टेकचन्द शर्मा, झुन्झुनू

करतार सिंह सराबा की शहादत की कहानी पाथेय कण में पढ़ने को मिली। भारतीय इतिहास में अभी भी ऐसे राष्ट्रभक्तों को उपयुक्त स्थान नहीं मिला है। इसलिये ऐसे स्वातंत्र्य योद्धाओं की जानकारी पूरे देश को कराना सराहनीय है।

-जयंती लाल राजपुरोहित, तिरूची (तमिलनाडु)
-गरिमा शर्मा, तालेड़ा (बूँदी)

यह अति प्रसन्नता का विषय है कि पाथेय कण आजादी के वीर सिपाहियों की खोज खबर रखता है और उस जानकारी को आम जन तक पहुँचाने का प्रयास भी करता है। वास्तव में देखा जाये तो भारत माता के उन सपूतों को यही सच्ची श्रद्धांजलि है।

-दिनेश चौधरी, जवाली (पाली)

करतार सिंह विलक्षण प्रतिभा के धनी एवं भारत माता के सच्चे सपूतों में से एक थे। उनके बलिदान ने कई और क्रांतिकारियों को जन्म दिया। धन्य है उनके माता-पिता जिनके संस्कारों ने उन्हें भारतीय इतिहास में अमर बना दिया।

-उपेन्द्र अग्रवाल, दादी का फाटक, जयपुर



साभार-DNA

सराबा जैसे क्रांतिकारियों ने मातृभूमि को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने हेतु अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। पाठ्य पुस्तकों में ऐसे राष्ट्रनायकों की जानकारी दी जानी चाहिए।

-अनिल चौधरी, सोडाला, जयपुर

मातृभूमि की सेवा और उसके लिए सब कुछ न्यौछावर कर देने की भावना का आज के समय में नितांत अभाव है। पाथेय कण जब सराबा जैसे क्रांतिकारियों का परिचय अपने पाठकों से करवाता है तो लगता है कि मातृभूमि के प्रति समर्पण की अलख जगा रहा है।

-पुष्पेन्द्र नायर, कांकरोली (राजसमंद)

प्रभावी संपादकीय

'भारत का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रधानमंत्री' विषय पर लिखा गया संपादकीय प्रभावी लगा। आजादी के बाद पहली बार लगा है कि देश की बागडोर अब ऐसे राष्ट्रभक्तों के हाथ में आई है जो देश की दशा और दिशा दोनों को ठीक करेंगे।

-गोपाल सैकड़ा, नया कटना (दौसा)
-राजकुमार मोदी, झालाना डूँगरी, जयपुर

प्रधानमंत्री के पाँच महीनों के कार्यकाल पर संपादकीय पढ़ा। अपने अल्प समय के कार्यकाल में विश्व भर को राष्ट्र की शक्ति और सामर्थ्य का साक्षात्कार कराना हम सभी भारतीयों के लिए गर्व की बात है।

-विष्णु सैन, गुर्जर की थड़ी, जयपुर

राज्य सरकार का अनदेखापन

'कश्मीर में आईएसआईएस के झण्डे' समाचार पढ़ा । दुनिया के क्रूरतम आतंकवादी गिरोह का झण्डा कश्मीर में लहराना वास्तव में चिंता का विषय है।

-प्रमोद वलसंगकर, दिलसुखनगर (हैदराबाद)

स्वास्थ्यवर्धक पपीता

अंक में आपका स्वास्थ्य स्तम्भ में इस बार पपीता के विषय में पढ़ा। शरीर की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ानें में सहायक पपीते के इतने गुण होते हैं पहली बार पता चला।

-प्रभुसिंह राणावत, साण्डेराव (पाली)

शिल्पकार एकनाथ रानडे

'विवेकानन्द शिला स्मारक के शिल्पी एकनाथ रानडे पर दिया गया प्रसंग प्रेरणादायक है। विवेकानन्द शिला स्मारक निर्माण के कठिन कार्य को एकनाथ जी ने अपनी सूझबूझ, जुझारूवृत्ति और दृढ़ निश्चय से पूर्ण किया।

-राजेन्द्र शर्मा, छबड़ा (बारां)

(पाक्षिक)

पाथेय कण

पौष शु. ११,२०७१ युगाब्द ५११६

१ जनवरी, २०१५

वर्ष ३० , अंक १८

अपनी बात

परम सुहृद पाठक वृन्द

सादर नमस्कार।

सेकुलर बिरादरी बेचैन है, हड़बड़ाई हुई है, परेशान है। इसीलिये आगरा में हुए घर-वापसी कार्यक्रम पर वे बेलगाम हो गये। पूज्य स्वामी सत्यमित्रानंद जी ने ठीक ही कहा कि विरोधी अपनी पराजय पचा नहीं पा रहे हैं। धैर्य के साथ उनकी हरकतों को सहन करने से अपने आप उन्हें सद्बुद्धि आ जायेगी। धर्मांतरण और घर-वापसी का अंतर समझाने का प्रयास इस अंक में हमने किया है। अंग्रेजी मानसिकता के लोगों की वास्तविकता बताने का भी कुछ प्रयास किया है। आप यह पढ़े और अपने मित्रों को भी बतायें।

अंक कैसा लगा, यह अवश्य लिखें।

जय श्री राम

आपका

सम्पादक

-: सदस्यता शुल्क :-

एक वर्षीय	₹ १००/-
१५ वर्षीय	₹ १०००/-

प्रबंधकीय कार्यालय

पाथेय भवन, बी-१९, न्यू कॉलोनी,

जयपुर- ३०२००१ (राज.)

फोनः0१४१-२३७४५१० फैक्सः २३६८५१०

Website: www.Patheykan.in

E-mail: Patheykan@gmail.com

भगवा से भड़कने वाले ये अंग्रेजीदां

यूरोपीय देश स्पेन में एक खेल हैं-सांड युद्ध। अखाड़े में एक हट्टा-कट्टा सांड छोड़ दिया जाता है। इसके बाद एक व्यक्ति हाथ में लाल रंग का कपड़ा लेकर अखाड़े में आता है। सांड लाल रंग को देख कर भड़कता है। वह व्यक्ति लाल कपड़ा सांड के सामने करता है और सांड उस पर झपटता है। आखिर में बार-बार झपटने से थका सांड बेदम हो अखाड़े में गिर पड़ता है। कभी-कभी खिलाड़ी भी चपेट में आ जाता है। पशुओं के प्रति क्रूरता के कारण इस पर रोक लगाने की माँग भी जब-तब उठती रहती है।

हमारे देश में एक श्रेणी के लोग भगवा रंग से भड़कते हैं। विशेषकर मिशन स्कूलों में पढ़े, अंग्रेजी अखबारों तथा दूरदर्शन चैनलों के अधिकतर सम्पादक-गण इसी श्रेणी में आते हैं। पूरी सेकुलर बिरादरी भी भगवा रंग देखते ही झपटने वालों में से है। देखा जाए तो भगवा रंग त्याग, तपस्या और पराक्रम का प्रतीक है। पश्चिम के पिछलग्गू और नकलची इतिहासकार भी भारत का इतिहास ईसा से पाँच सौ वर्ष पूर्व से तो मानते ही हैं। इन ढाई हजार वर्षों में भारत के प्रत्येक राज-वंश, प्रत्येक भारतीय शासक ने भगवा-ध्वज को ही श्रेष्ठता और श्रद्धा का प्रतीक माना। पूज्य धर्माचार्य और सन्यासी भगवा वस्त्र ही धारण करते हैं। आज भी एक आम भारतीय की 'भगवा रंग' के प्रति अगाध श्रद्धा है।

और ये अंग्रेजीदां लोग और सेकुलर बिरादरी भगवा देखते ही, भगवा सुनते ही लाल-पीले हो जाते हैं। हालांकि लाल और पीले रंग के मिश्रण से ही भगवा बनता है इसलिये इनकी नियति भी भगवा को स्वीकारने में ही होने वाली है, लेकिन इनकी हरकतें बड़ी आश्चर्यजनक हैं। दुनिया में शायद ही और कोई ऐसा देश हो, जहाँ का मीडिया इस बुरी तरह अपने आपको गालियाँ देता हो, जिस तरह भारत के अंग्रेजीदां लोग देते हैं। शायद ही किसी और देश के अधिकतर संवाद माध्यम इस बुरी तरह अपनी जड़ों से कटे हुए होंगे।

पहले तो इन लोगों ने जर्मन-संस्कृत विवाद भड़काया। जर्मन सरकार, भारत सरकार का जर्मन दूतावास और जर्मनी का मीडिया पूरा जोर लगा रहा था कि भारत के केन्द्रीय विद्यालयों में जर्मन ही पढ़ाई जाती रहे। दूसरी ओर यहाँ के सेकुलरवादी और अंग्रेजी-मानसिकता के सम्पादक भी अपनी भाषा का समर्थन करने के स्थान पर उसके विरोध में खड़े हो गये। जो संस्कृत भारत की आत्मा है, भारत की पहचान है उसके निर्लज्ज विरोध में ये 'सेकुलरवादी-प्रगतिवादी' खड़े हो गये। जर्मन-अमरीकी वैज्ञानिक श्री ओपनहाइनर ने जब नेवादा के रेगिस्तान में पहला परमाणु परीक्षण किया तो उसने परमाणु धमाके का वर्णन करते हुए गीता के ग्यारहवें अध्याय का वह बारहवाँ श्लोक पढ़ा जिसमें 'विराट स्वरूप का वर्णन है।

> **दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता।**
> **यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः।।** गीता-११/१२।।
>
> श्रीकृष्ण के विराट् रूप का वर्णन करते हुए संजय कौरवों के पिता धृतराष्ट्र से कह रहा है, कि हे महात्मा हजारों सूर्य यदि आकाश में उदित हो जायें तो जितना उनका प्रकाश होगा, वह भी शायद ही उस विराट स्वरूप के प्रकाश के समान होगा।

आगरा परावर्तन विवाद

यह धर्मांतरण नहीं घर वापसी है

आगरा में गत दिनों ५७ मुस्लिम परिवार एक कार्यक्रम में फिर से अपने पूर्वजों के हिन्दू धर्म में लौट आये। इस पर देश भर के संवाद-माध्यमों ने अकारण ही विवाद खड़ा कर दिया। मीडिया की देखा-देखी सेकुलरवादी राजनैतिक दलों ने भी आसमान सिर पर उठा लिया और संसद को नहीं चलने दिया।

क्या ये ऐसा गम्भीर मामला है?- प्रश्न उठता है कि क्या घर-वापसी ऐसा गम्भीर मामला है कि जिस पर संसद को ठप कर दिया जाये? देखा जाये तो यह एक साधारण सी घटना है।उक्त ५७ परिवारों का पहले धर्मांतरण हुआ था। अर्थात् लोभ-लालच और जोर-जबर्दस्ती से उन्हें पहले मुसलमान बनाया गया था। उन्होंने फिर से अपने पुरखों के हिन्दू धर्म में लौटने की इच्छा जताई। इसलिये उनकी शुद्धि कर उनको फिर से हिन्दू बनाया गया।

क्या यह धर्मांतरण है- सेकुलर जमात ने इस साधारण सी घटना पर शोर मचा दिया, कि मुसलमानों का धर्मांतरण किया गया है। धर्म तो उनका पहले बदला गया था। अब तो उनकी घर-वापसी हुई। अतः यह धर्मांतरण यह धर्म परिवर्तन की घटना तो कतई नहीं थी। इस घटना पर उ.प्र. की सरकार ने जो जाँच समिति बनाई, उसका भी कहना है कि उक्त मामले में कोई जोर-जबर्दस्ती नहीं की गई। धर्म परिवर्तन तो वह है जो ईसाई मिशनरियाँ वनवासी क्षेत्रों में कर रही हैं। धर्मांतरण तब होता है जब मुस्लिम नौजवान षड़यंत्रूपर्वक हिन्दू लड़कियों को भगा कर पहले उनसे निकाह करते हैं और फिर उनको जबरन मुसलमान बना देते हैं।

हिन्दू समाज किसी का धर्म नहीं बदलता- किसी का भी धर्म बदलना यह हिन्दू-समाज की प्रकृति में हीं नहीं है। दो हजार साल पहले एक ईसाई पादरी ने केरल की जमीन पर पैर रखा। उस समय के वहाँ के राजा ने पादरी को चर्च बनाने के ☛

☞ और देखिये, २५ नवम्बर के 'इंडियन एक्सप्रेस' में एक समाचार प्रकाशित हुआ कि 'बस्तर क्षेत्र के माधोता गाँव में कुछ ईसाइयों को जो पहले हिन्दू थे, फिर से हिन्दू बनाया गया है।' इससे क्षेत्र में आतंक व्याप्त हो गया है और शांति भंग हो गई है। याने दसियों सालों से पादरी वनवासियों को ईसाई बनाते रहे तो शांति भंग नहीं हुई और उनकी घर-वापसी हुई तो आतंक फैल गया? आगरा की 'घर-वापसी' पर अंग्रेजी अखबारों और सेकुलर जमात ने जो शोर मचाया वह तो सबके सामने ही है। अब १५ दिसम्बर के कुछ अंग्रेजी अखबारों के समाचार देखिये- **दैनिक स्टेट्समेन** में मुख-पृष्ठ पर बड़ा समाचार था कि एक वैदिक श्लोक पाठ्यक्रम में लाया जा रहा है, यह भगवाकरण बर्दाश्त नहीं होगा। **टाइम्स ऑफ इण्डिया** में सम्पादकीय लिखा गया कि 'समान नागरिक संहिता' की भगवाई कोशिश की गई तो देश बँट जायेगा। इसी अखबार के भीतर छपा कि पंजाब में संघ की शाखाओं का बढ़ना चिंताजनक है। एक दिन पहले **'हिन्दुस्तान टाइम्स'** में छपा कि उत्तर पूर्व में संघ की शाखांए बढ़ना विनाशकारी है।

दो अंग्रेजी अखबार क्रिसमस की छुट्टी की चिंता में दुबले हो गये। इंडियन एक्सप्रेस और टाइम्स ऑफ इण्डिया ने हल्ला मचा दिया कि केन्द्र सरकार केन्द्रीय विद्यालयों में क्रिसमस की छुट्टी रद्द कर रही है।

१६ दिसम्बर के इंडियन एक्सप्रेस में 'विजय दिवस' (भारतीय सेना की पाकिस्तान पर विजय, बंग्लादेश की स्वतंत्रता) पर तो कुछ नहीं छपा, पर मुम्बई के मुख्य पादरी का काफी बड़ा वक्तव्य छपा जिसमें अलीगढ़ का 'घर वापसी' कार्यक्रम रद्द करने की माँग की गई थी। विजय दिवस पर किसी भी अंग्रेजी अखबार में कुछ नहीं लिखा। लेकिन इसी दिन इं. एक्सप्रेस ने एक और महान काम कर दिया। पृष्ठ ६ पर आधे से अधिक पृष्ठ में इस समाचार पत्र ने **खूँखार आतंकी अब्दुल करीम टुंडा** की जीवनी छाप दी। यह अपराधी अभी जेल में है। इस लेख की चकित करने वाली बात यह थी कि इसमें टुंडा को आतंकी बनाने का आरोप भी भगवा लोगों पर मढ़ दिया गया। लिखा गया कि बाबरी ढांचा ध्वस्त किये जाने के कारण टुंडा आतंकी बना।

दिसम्बर में ही बिहार के कहलगाँव (भागलपुर) में एक परिवार को पादरियों ने मुफ्त इलाज का लालच देकर ईसाई बना लिया। यह समाचार अपवाद छोड़ कर किसी ने प्रकाशित नहीं किया और जिसने छापा उसने भी इसे धर्मांतरण नहीं बताया। शीर्षक था कि 'परिवार ने ईसाईयत को अपनाया'। यह है अंग्रेजी दिमाग के लोगों का पाखण्ड। इतिहास की गलतियाँ ठीक करने की बात आती है तो ये इसे 'भगवाकरण' बता कर भड़कते हैं।' शिक्षा में सुधार की बात उठे तो ये वही आरोप लगा कर आपे से बाहर हो जाते हैं। पं. मदन मोहन मालवीय पर निबंध प्रतियोगिता में भी इन्हें भगवाकरण दिखता है। और तो और टुंडा जैसे दुर्दांत आतंकियों के पीछे भी इन्हें भगवा ही नजर आता है। लगता है ये सुबह के समय तब अन्धे हुए जब सूर्य भगवा रंग का होता है। प्रातःकाल के अन्धे को सब भगवा ही भगवा दिखेगा। जब ऐसे मित्र और शुभचिन्तक देश में हों तो फिर शत्रुओं की जरूरत तो है ही नहीं। ❑

जो भटक गया उसे वापस अवश्य लायेंगे- भागवत जी

आगरा की घर वापसी कार्यक्रम पर हुए शोर-गुल का उत्तर देते हुए सरसंघचालक श्री भागवत जी ने कहा है कि जो भी व्यक्ति हिन्दू धर्म से भटकता है उसे अवश्य ही वापस लाया जायेगा। वे कोलकाता में आयोजित विश्व हिन्दू परिषद के सम्मेलन में बोल रहे थे। सम्मेलन विहिप के **स्वर्ण जयंती समारोहों** के अन्तर्गत आयोजित किया गया था। उन्होंन स्पष्ट किया कि किसी का धर्म बदलने की इच्छा हिन्दू समाज की नहीं है, लेकिन जो लोग हिन्दू धर्म से भटकाये गये हैं उनकी वापसी के प्रयास निश्चित रूप से किये जायेंगे। कोलकाता के विहिप सम्मेलन में भारी संख्या में लोग आये थे। उन्हें सम्बोधित करते हुए भागवत जी ने कहा कि **भारत हिन्दू राष्ट्र है।** पाकिस्तान भी भारतभूमि है। हिन्दू अब जाग्रत हो रहा है और किसी को इससे डरने की जरूरत नहीं है। दुनियाभर में आतंक से पीड़ित लोगों की बस हिन्दू ही मदद कर सकते है। उन्होंन कहा कि 'घर-वापसी' का विरोध करने वालों को पहले हिन्दुओं का दूसरे धर्मों में परिवर्तन रोकना चाहिये।

☛ लिये जमीन दी और ईसाइयत का प्रचार करने की पूरी छूट दी। ईरान से भगाये गये पारसी हिन्दुस्तान में आये। यहाँ उन्हें अपनी आस्था और परम्परा के साथ रहने की पूरी स्वतंत्रता दी गई। डेढ़ हजार साल पहले यहूदियों को भी फिलस्तीन से निकाला गया। वहाँ सें वे पूरी दुनिया में गये। सभी देशों में उन पर भयावह अत्याचार किये गये। एकमात्र भारत ही ऐसा देश था, जहाँ उन्हें पूरा सम्मान और पूजा की स्वतंत्रता मिली। किसी ईसाई, किसी पारसी, किसी यहूदी को हमने हिन्दू नहीं बनाया। किसी पर हिन्दू हो जाने का दबाव नहीं डाला।

धर्मांतरण कौन करता है- पहले इस्लाम को लें । इतिहास बताता है कि कहीं भी इस्लाम शांति के साथ नहीं फैला। तलवार के जोर पर दुनिया के लोगों को मुसलमान बनाया गया। जो नहीं बने उन्हें निकाल दिया गया। ईरान से पारसी समाज को इसीलिये भागना पड़ा। कश्मीर घाटी से पण्डितों को जिस क्रूरता से भगाया गया, वह हम भूले नहीं होंगे।

-बांग्लादेश की प्रसिद्ध लेखिका **तसलीमा नसरीन** ने आगरा विवाद के बाद कहा-**जबरन धर्मांतरण न होता तो आज इस्लाम का अस्तित्व नहीं होता।**

-जम्मू-कश्मीर के छह साल तक मुख्यमंत्री रहे उमर अब्दुल्ला ने माना कि कुछ पीढ़ी पहले उनके पूर्वज भी हिन्दू थे।

-जनता दल (यूनाइटेड) के एक मुस्लिम नेता ने माना कि भारत के मुसलमानों में ९९ प्रतिशत पहले हिन्दू थे। अरबी मुसलमान तो एक फीसदी से भी कम हैं।

स्पष्ट है कि धर्मांतरण इस्लाम को मानने वाले करते हैं। पवित्र कुरान उन्हें दुनिया को 'दारूल-इस्लाम' याने इस्लाम की भूमि बनाने का आदेश देता है।

ईसाई जनसंख्या कैसे इतनी बढ़ी- मुसलमानों की तरह ईसाइयों के मुखिया पोप भी दुनिया को ईसाई बनाने का आदेश देते हैं। पहले पादरियों ने यूरोप को ईसाई बनाया, फिर लातीन अमरीका को ईसा का अनुयायी बनाया गया और उसके बाद अफ्रीका का ईसाईकरण किया गया। अब एशिया की बारी है।

कोलकाता उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश और पदम-भूषण से सम्मानित डा. दुर्गादास बसु ने जनसंख्या-असंतुलन का अध्ययन करने के बाद चौंकाने वाले निष्कर्ष निकाले। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

-भारत की कुल ईसाई जनसंख्या के आधे दक्षिण भारत, विशेषकर केरल और तमिलनाडु में हैं। पाँचवा हिस्सा उत्तर-पूर्व के राज्यों में तथा दसवाँ हिस्सा छोटा-नागपुर झारखण्ड क्षेत्र में हैं।

-केरल में ईसाई आबादी सौ सालों में १३% से बढ़ कर २० % हो गई।

-मेघालय में आजादी में बाद के पचास सालों में ईसाई जनसंख्या तीन गुनी (६५%) तथा नागालैण्ड में दो गुनी (८८%) हो गई। मिजोरम में १९०१ से १९५० के बीच ईसाई दो फीसदी से ९० फीसदी हो गये।

-अरुणाचल प्रदेश में जनगणना १९६१ से प्रारम्भ हुई। उस समय मात्र ०.३% ईसाई वहाँ थे। तीस सालों में वहाँ ११ % अर्थात् चालीस गुनी ईसाई आबादी हो गई।

-यही स्थिति उड़ीसा, झारखण्ड, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के वनवासी क्षेत्रों की है।

सवाल यह उठता है कि उत्तर-पूर्वी राज्यों, केरल, तमिलनाडु तथा उड़ीसा आदि राज्यों के वनवासी क्षेत्र में ईसाई इतने कैसे बढ़ गये? वहाँ के लोगों का धर्म-परिवर्तन किया गया इसीलिये ईसाई बढ़े। और यह ईसाईकरण सेवा के नाम पर हुआ, लालच देकर हुआ, डरा धमका कर हुआ। लोगों की गरीबी का लाभ उठा कर धर्मांतरण किया गया।

घर-वापसी पर आपत्ति क्यों- तो लालच से, धमका कर, फुसला कर जिनका धर्म बदला गया, वे अब वापस आना चाहते हैं तो इस पर आपत्ति क्यों है? क्यों सेकुलर बिरादरी इतनी व्याकुल हो रही है? यह इकतरफा प्रयाण कब तक चलता रहेगा? कब तक चलने दिया जायेगा?

इसलिये आगरा की घटना धर्मांतरण नहीं, घर वापसी है और इसका खुले दिल से स्वागत किया जाना चाहिये। ❑

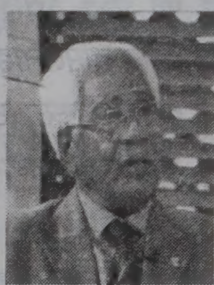
२१ जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित

संयुक्त राष्ट्र संघ ने हर साल २१ जून को 'अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस' के रूप में मनाने की घोषणा की है। पूरे देश के संतों, धर्माचार्यों, सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्रों के नेताओं ने इस पर प्रसन्नता जताई है। गत सितम्बर माह के अंत में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अमरीका की यात्रा की थी। उस समय उन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासभा को भी सम्बोधित किया था। हिन्दी में दिये गये अपने भाषण में उन्होंने कहा था कि वर्ष में कोई एक दिन योग-दिवस के रूप में भी मनाया जाना चाहिये।

कई देशों ने तुरंत ही इस प्रस्ताव का समर्थन भी कर दिया। दो महीने में सं.रा.सं. के १९३ सदस्य देशों में से १७७ देशों ने लिखित में योग-दिवस मनाने का समर्थन किया। परिणामस्वरूप आगामी २१ जून से हर साल इस तिथि को **योग साधना** पर बल दिया जायेगा। ऋषिकेश के परमार्थ निकेतन आश्रम के स्वामी चिदानंद ने इस पर कहा कि, इतने सारे देशों का योग का महत्व स्वीकार करना ऐतिहासिक है।

अनिरुद्ध जगन्नाथ मारीशस के प्रधानमंत्री बने

भारतीय मूल के श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ फिर से मारीशस के प्रधानमंत्री बन गये हैं। उनके दल ने वहाँ के संसदीय चुनावों में दो-तिहाई बहुमत प्राप्त कर जोरदार जीत पाई है। उनके दल ने ६२ में से ४७ सीटों पर विजय प्राप्त की। वे पहले भी दो बार प्रधानमंत्री और एक बार राष्ट्रपति के रूप में देश की बागडोर सम्भाल चुके हैं।



मारीशस में हिन्दू काफी बड़ी संख्या में हैं। दो सौ साल पहले अंग्रेज मजदूरी के लिये भारतवंशियों को वहाँ ले गये थे। गत वर्ष सितम्बर के अंत में भारत के लोगों के मारीशस में दो सौ साल पूरे होने पर भव्य समारोह मनाया गया था।

समारोह में भाग लेने भारत की विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज्य भी पहुँची थीं।

ऐसा होता है भाषा का स्वाभिमान

इजरायल में हर साल १८ से २५ दिस. तक हानुक्का पर्व मनाया जाता है। पहली बार एक भारतीय प्रधानमंत्री ने इस पर्व पर इजरायल के प्रधानमंत्री को बधाई संदेश भेजा। विशेष बात यह थी कि श्री नरेन्द्र मोदी ने ये शुभकामनायें **इजरायल की राष्ट्र-भाषा हेब्रू** में भेजीं। विशेषता का जवाब भी विशेषता से ही मिला। प्रधानमंत्री नेतान्याहू ने बधाई का धन्यवाद **भारत की राष्ट्र-भाषा हिन्दी में** भेजा। ऐसा होता है भाषा का स्वाभिमान।

हानुक्का यहूदियों का सबसे प्रमुख पर्व है। विश्व में जहाँ कहीं भी यहूदी हैं, इस पर्व को श्रद्धा से मनाते हैं। इजरायल में आठ दिनों तक 'हानुक्का' मनाया जाता है। हानुक्का का अर्थ है- प्रकाश का उत्सव। अर्थात् जिस तरह भारत में दिवाली पर रोशनी की जाती है उसी प्रकार इजरायल में व अन्य स्थानों के यहूदी परिवारों में भी मोमबत्ती तथा बिजली के बल्बों से रोशनी की जाती है। दिवाली और हानुक्का मनाने के कारण भी एक जैसे हैं। यूनानी सम्राट सैल्यूकस (जो चन्द्रगुप्त मौर्य से हारा था) के वंशज एंटिओक्स ने फिलस्तीन पर कब्जा कर लिया था। इसी के साथ उसने यहूदियों के धर्म को नष्ट करना शुरू कर दिया। मेक्केबियस नाम का एक यहूदी उसके विरोध में खड़ा हो गया। उसने लोगों को संगठित कर यूनानियों पर आक्रमण कर दिया। चतुर रणनीति से संख्या में अधिक ग्रीक सेना को हरा कर उसने येरूशलम में प्रवेश किया।

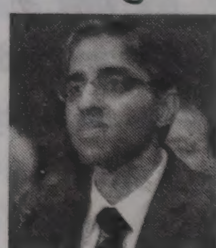
यह ईसा से १२५ वर्ष पहले की घटना है। इसे इजरायल के इतिहास में 'मेक्काबी-विजय' नाम से जाना जाता है। इसी खुशी में प्रकाश का पर्व हानुक्का मनाया जाता है।

सिंक्यांग में नमाज पर रोक

दुनिया के अन्य देशों की तरह चीन भी आतंकवाद से पीड़ित है। चीन में आतंक का गढ़ है पश्चिमी सीमा का सिक्यांग (जिनजियांग) प्रांत। अफगानिस्तान, तजाकिस्तान, किरगिजिस्तान आदि मुस्लिम देश सिंक्यांग के पड़ौस में हैं। इस प्रांत में उईघर मुस्लिम काफी बड़ी संख्या में हैं। मुस्लिमों की बड़ी आबादी और पीठ पर मुस्लिम देश, आतंकवाद को और क्या चाहिये। इसलिये सिंक्यांग में आए दिन आतंकी गिरोह हिंसा की वारदातें करते रहते हैं।

चीनी सरकार इन पर कड़ी कार्रवाई भी कर रही है। आतंकियों को तुरत-फुरत फैसला कर गोली से उड़ा दिया जाता है। सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं के बुर्के पर रोक लगा दी गई है। हाल ही में चीनी सरकार ने सिंक्यांग प्रांत में सरकारी भवनों, स्कूलों और कार्यालयों में नमाज पढ़ने पर रोक लगा दी है।

विवेक मूर्ति बने अमरीका के मुख्य चिकित्साधिकारी



डा. विवेक हालेगिरी मूर्ति अमरीका के 'सर्जन जनरल' अर्थात् मुख्य चिकित्साधिकारी बनाये गये हैं। यह प्रतिष्ठित स्थान पाने वाले वे अब तक के सबसे कम आयु के डाक्टर हैं। वे पहले भारतीय भी है जो अमरीका की पूरी स्वास्थ्य-व्यवस्थाओं को मुख्य चिकित्सक के रूप में नियंत्रित करेंगे। भारतीय मूल के अमरीकी डाक्टरों के संगठन के मुखिया डा. रवि जागीरदार ने इसे बहुत बड़ी उपलब्धि बताया है।

सेना के जवानों ने विजय दिवस मनाया

सोलह दिसम्बर वह गौरवशाली दिन है जब एक नया इतिहास लिखा गया और नवीन भूगोल की रचना हुई। इस दिन पूर्वी पाकिस्तान में भारतीय सेना ने पाकिस्तानियों को करारी पटक लगाई। ले.ज. नियाजी के नेतृत्व में नब्बे हजार पाकिस्तानी सैनिकों ने आत्म-समर्पण किया और बांग्लादेश नाम का एक नया देश बना। इतनी बड़ी संख्या में फौजियों ने विश्व के युद्ध-इतिहास में पहली बार समर्पण किया था।

इस ऐतिहासिक घटना की स्मृति में सैनिक छावनियों में 'विजय दिवस' मनाया जाता है। **पूर्व सैनिक सेवा परिषद** भी अनेक स्थानों पर विजय दिवस समारोह आयोजित करती है। बीती १६ दिसम्बर को भी जयपुर और जोधपुर की सैनिक छावनियों में विजय-दिवस मनाया गया। जयपुर छावनी में प्रेरणा स्थल पर १९७१ के युद्ध में वीरगति को प्राप्त जवानों को श्रद्धा-सुमन चढ़ाये गये। इस अवसर पर लेफ्टिनेंट जनरल अरुण कुमार साहनी ने जवानों को याद करते हुए कहा कि हमें मुस्तैदी से सीमाओं की रक्षा करनी है।

विजय दिवस पर मराठा इंफ्रेंट्री का एक जवान कराड़ (महा.) में मलखम्ब पर करतब दिखाते हुए



जोधपुर में सेना की कोणार्क-कोर के मुख्यालय पर विजय दिवस मनाया गया। कोणार्क कोर उस युद्ध के समय पाकिस्तानी सीमा पर तैनात थी। इसके जवानों ने लोंगेवाला, गदरा-रोड़, छाछरू आदि मोर्चों पर असाधारण वीरता दिखाई। कोर-कमाण्डर मेजर जनरल जाखड़ ने उन जवानों की वीरता को याद करते हुए शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि दी।

सन् १९७१ के भारत-पाक युद्ध में बांग्लादेश के मोर्चे पर ही हमारे डेढ़ हजार जवान वीरगतिं को प्राप्त हुए। लगभग साढ़े चार हजार जवान घायल हुए। हमारी सेना ने सैनिक इतिहास का एक अद्भुत कारनामा कर दिखाया। लेकिन दुख की बात है देश ने इसे लगभग भुला दिया है। मीडिया को भी हमारे सैनिकों के शौर्य की परवाह नहीं है। देश के नेता आगरा की घर-वापसी जैसे मामलों में देश का समय और पैसा बर्बाद करते रहते हैं। मीडिया तो बिल्कुल ही बौरा गया है। अंग्रेजी अखबार जर्मन भाषा, क्रिसमस की छुट्टी आदि की चिन्ता में ही दुबले हो रहे हैं। जवानों के बलिदान को याद करने की फुरसत उन्हें नहीं है।

फिल्म पीके के निर्माता-निर्देशक को नोटिस

भारतीय फिल्मों में हिन्दू देवी-देवताओं और श्रद्धा केन्द्रों के अपमान का सिलसिला लम्बे समय से चल रहा है। सेकुलरवाद के चलते इसमें और तेजी आई है।

एक के बाद एक फिल्मों में जनता के श्रद्धा-केन्द्रों का मजाक उड़ाने का क्रम लगातार चल रहा है। अभी एक नई फिल्म **पीके** सिनेमाघरों में दिखाई जा रही है। इसमें भगवान शिव शंकर और गणेश जैसे व्यापक रूप से पूजे जाने वाले देवताओं का उपहास किया गया है। एक दृश्य में शिव जी भागते हुए और फिल्म के नायक का उनका पीछा करते हुए दिखाया गया है।

इस पर दिल्ली की 'हिन्दू लीगल सैल' ने फिल्म पीके के निर्माता, निर्देशक और अभिनेता के विरुद्ध दिल्ली पुलिस में रपट लिखाई है। रपट में शिकायत की गई है कि फिल्म के उक्त दृश्यों से हिन्दू समाज की भावनाएं आहत होती हैं और इससे साम्प्रदायिक सद्भाव को चोट पहुँचती है।

ऐसे ज्ञानी हैं जनता के प्रतिनिधि

पिछले दिनों भारत के श्री कैलाश सत्यार्थी को शांति के नोबुल पुरस्कार की घोषणा हुई। बीते १० दिसम्बर को उन्हें नार्वे की राजधानी ओस्लो में यह प्रतिष्ठित पुरस्कार दिया गया। श्री सत्यार्थी विदिशा (म.प्र.) के हैं इसलिये दूरदर्शन चैनलों ने मध्यप्रदेश के जन-प्रतिनिधियों से उनकी राय जाननी चाही।

म.प्र. सरकार में एक मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय भी हैं। अधिकतर लोगों ने समझा कि नोबुल पुरस्कार मंत्री महोदय को ही मिला है। कांग्रेस की एक विधायक ने कहा कि 'केन्द्र और राज्य दोनों जगह भाजपा की सरकार है। ये झूठे पुरस्कार ले जाते हैं। मुझे हैरानी है कि विजयवर्गीय को नोबेल कैसे मिल गया।'

बसपा के एक विधायक की भी यही शिकायत थी कि 'दोनों जगह सरकार होने का फायदा उठा लिया कैलाश विजयवर्गीय ने। नोबेल लायक कोई काम तो किया नहीं उन्होंने।'

म.प्र. भाजपा के लोग इन टिप्पणियों से गरमा गये। एक मंत्री महोदया ने कहा कि विजयवर्गीय को नोबेल मिलना हम सभी के लिए गर्व की बात है। विकास के अनेक काम किये हैं उन्होंने। एक विधायक ने भी गर्व करने की बात कही और आगे जोड़ा कि हम सब कोशिश करेंगे कि पार्टी को एक और नोबेल मिले।

अंतरिक्ष विज्ञान में भारत की एक और सफलता

जी.एस.एल.वी. मार्क–३ का सफल प्रक्षेपण

अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भारत एक के बाद एक सफलता की नई सीढ़ियाँ चढ़ता जा रहा है। गत १८ दिसम्बर को जीएसएलवी मार्क–३ को सफलता से अंतरिक्ष में भेज कर वैज्ञानिकों ने एक और चमत्कार कर दिखाया है। प्रक्षेपण केन्द्र श्रीहरिकोटा से यह उपग्रह अंतरिक्ष में भेजा गया।

मार्क–३ नाम का यह उपग्रह ६३० टन का है। इतना भारी उपग्रह जीएसएलवी राकेट के द्वारा प्रक्षेपित करना ही अपने आप में बड़ी सफलता है। इसके साथ एक मानव–रहित यान भी था जो बाद में ठीक समय पर बंगाल की खाड़ी में वापस आ गया। इस प्रयोग के बाद भारत वासी अंतरिक्ष की यात्रा कर सकेंगे। मार्क–तीन में ऐसे उपकरण लगे हैं जिनसे संदेशों का आदान–प्रदान तीव्र गति से हो सकेगा। मौसम का सटीक अनुमान लगाया जा सकेगा तथा संचार माध्यकमों के प्रसारण में तेजी व उनकी गुणवत्ता में सुधार होगा।

सेकुलरों की नई खोज–आतंक की जनक अयोध्या है

अब देश की खुफिया एजेंसियों, सुरक्षा एजेंसियों तथा सरकारों को चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। इसलिये कि हमारे सेकुलर खोजियों ने आतंकवाद का मुख्य कारण खोज निकाला है। इन वैज्ञानिकों के अनुसार श्रीरामजन्मभूमि आन्दोलन के **कारण** भारत में आतंकवाद पनपा।

आप हैरान मत होइये! केवल इतना करें कि अंग्रेजी दैनिक **इंडियन एक्सप्रेस** का १६ दिसम्बर का अंक निकालें और उसका पृष्ठ ६ खोलें। इस पेज पर ऊपर से नीचे तक आतंकी अब्दुल करीम टुंडा की जीवनी प्रकाशित हुई है। ध्यान दें कि पूरे अखबार में १६ दिसम्बर को पड़ने वाले 'विजय दिवस' पर एक भी लाइन नहीं है। पर जेल में बंद और कई वारदातों के आरोपी टुंडा का जीवन संवाददाता प्रवीण स्वामी के नाम से प्रमुखता से छापा गया है। इसमें बताया कि है कि अब्दुल करीम सीधा–साधा आदमी था। श्रीरामजन्मभूमि पर लगा ताला न्यायालय के आदेश से खोल दिया जाने के कारण वह आतंकी बन गया।

वाकई यह सोच नोबुल पुरस्कार के लायक है।

चित भी मेरी, पट भी मेरी

एक बड़ी पुरानी कहावत है–*चित भी मेरी, पट भी मेरी और अण्टा मेरे बाप का।* इसे दूसरे शब्दों में दोनों हाथों में लड्डू रखना भी कहते हैं। दिल्ली के ईसाई पादरियों के मुखिया आर्क बिशप अनिल काउटो पर यह कहावत पूरी तरह खरी उतरती है। गत १८ दिसम्बर को दिल्ली में उन्होंने 'घर–वापसी' कार्यक्रम को जम कर कोसा। उन्होंने कहा *'घर वापसी अभियान देश की शांति और सौहार्द्र के लिये खतरा है।'*

आगरा में कुछ दिनों पहले ऐसे मुसलमानों की शुद्धि कर पुनः हिन्दू बनाया गया जो पहले कभी मुसलमान बन गये थे। चुंकि वे पूर्व में हिन्दू ही थे, इसलिये उनकी शुद्धि को 'घर वापसी' कहा गया। पादरी काउटो इसी अभियान से नाराज हैं। देश के मीडिया और सेकुलर जमात ने भी इस घर–वापसी पर काफी शोर मचाया। राज्य सभा भी कई दिनों तक इस मामले पर ठप्प रही।

लेकिन बिशप काउटो ने यह भी कहा कि **'ईसाई समुदाय धर्मांतरण रोकने का कोई भी कानून बनाने के पक्ष में नहीं है।'** अर्थात् वे चाहते हैं कि ईसाई पादरी तो लोगों को बहला–फुसला कर ईसाई बनाते रहें, लेकिन 'धर्म जागरण समिति' इस प्रकार ईसाई बनाये गये लोगों को वापस हिन्दू नहीं बनाये। पादरी हिन्दू समाज के लोगों को ईसाई बनायें तो शांति को कोई खतरा नहीं और घर–वापसी से शांति पर खतरा मंडरा जायेगा। है न मजेदार तर्क। इसी को कहते हैं चित भी मेरी और पट भी मेरी।

निखर उठा श्री गुरु जी का पैतृक आवास

संघ के द्वितीय सरसंघचालक श्री गुरु जी की बाल्यावस्था रामटेक में निकली। नागपुर से पचास कि.मी. दूरी पर है यह स्थान। वनवास काल में प्रभु श्री राम यहाँ भी रुके थे इसीलिये इस स्थान का नाम रामटेक पड़ा। ठीक से रख–रखाव न होने के कारण श्रीगुरुजी का निवास स्थान जर्जर हो रहा था। हाल ही में इस भवन की मरम्मत की गई है। नवीनीकरण इस प्रकार किया गया है कि आवास के स्वरूप में कोई बदलाव नहीं हुआ है। श्रीगुरुजी के पैतृक आवास का नवीनीकरण पूर्ण होने के अवसर पर सरसंघचालक श्री भागवतजी तथा भारत माता मंदिर, हरिद्वार के कार्याध्यक्ष आचार्य श्रीगोविद देव गिरि जी महाराज उपस्थित थे। श्रीगुरुजी ने अपना यह आवास तथा साथ की जमीन भारतीय उत्कर्ष मण्डल को दे दी थी। अभी यहाँ रा.स्व.संघ का कार्यालय है।

तिरुवल्लुवर का जन्मदिन राष्ट्रीय स्तर पर मनेगा

आज से लगभग बाईस सौ वर्ष पूर्व तमिलनाडु में जन्मे सुप्रसिद्ध संत कवि तिरुवल्लुवर का जन्मदिन अब राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जायेगा। तिरुक्कुरल जैसे महान् ग्रन्थ के रचनाकार तिरुवल्लुवर तमिल के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार माने जाते हैं। उनकी एक भव्य मूर्ति शीघ्र ही रूस की राजधानी में भी लगने वाली है। तमिलनाडु और पुडुचेरी में हर साल १५ जनवरी 'तिरुवल्लुवर दिवस' के रूप में मनाई जाती है। अब पूरे देश में इस संत कवि का जन्म दिवस मनाया जायेगा।

धरती माता का जन्मोत्सव है मकर संक्रान्ति

मकर संक्रांति भारत का एक महत्वपूर्ण उत्सव है। पूरे भारत में किसी न किसी रूप में इसे मनाया जाता है। दक्षिण भारत में पोंगल और उत्तर भारत में 'लोहड़ी' के रूप में यह मनाया जाता है। देखा जाय तो पूरे विश्व में मकर संक्रांति पर्व मनाया जाता है। अठारह सौ साल पहले मकर संक्रांति २५ दिसम्बर को आती थी। इस दिन पूरे यूरोप में सूर्य-पूजा होती थी। बाद में पादरियों ने ईसा का जन्मदिन इसके साथ जोड़ कर क्रिसमस के रूप में इसे मनाना शुरू कर दिया। इस दिन तिल की वस्तुएं खाने का प्रचलन है। बिखरे हुए तिलों को गुड़ के मीठे बन्धन में बांधने से स्वादिष्ट मिष्ठान बन जाता है। इस तरह यह पर्व संगठन की भी प्रेरणा देता है। आगे के लेख में इस महापर्व का महत्व स्पष्ट किया गया है-

मकर संक्रांति पर्व अपने देश का ही नहीं वरन् सारे भू-मण्डल का, सारी मानव जाति का एक महान् पर्व है। यह मानव जाति जिस भू-मण्डल पर जीती है उसे हम पृथ्वी कहते हैं, धरती माता कहते हैं। वेद में कहा है- भूमि मेरी माता है और मैं इस पृथ्वी का पुत्र हूँ। धरती के अनेक पुत्रों के जन्मोत्सव हम मानते हैं। पर मकर संक्रांति स्वयं धरती माता का ही जन्मोत्सव है। यह धरती माता के जन्मने का दिन है, इसी दिन हमारी धरती सूर्य से पृथक् होकर स्वतंत्र ग्रह के रूप में सूर्य की प्रदक्षिणा करने लगी।

मकर संक्रांन्ति और लोहड़ी- मकर संक्रांति के दिन हमारी धरती उस प्रतप्त अग्निपिण्ड सूर्य से पृथक होकर मघा नक्षत्र की ओर चली गयी और उसने सूर्य की परिक्रमा शुरू कर दी। इसकी विस्तृत व्याख्या स्कन्दपुराण में है। **स्कन्दपुराण** में कहा कि धरती माता ने सूर्य से जन्म पाने के बाद अपने जन्मदाता भगवान अंशुमाली को, सूर्य को नमस्कार किया। धरती का नमस्कार करना क्या हुआ? धरती की धुरी का साढे ६६° अंश के कोण पर सूर्य की ओर झुकना है।

एक बार ऋषियों ने धरती की सूर्य की परिक्रमा पूरी होने की खुशी में वर्ष के अंतिम दिन एक यज्ञ किया। बहुत बड़ा यज्ञ। पवित्र अग्नि जलायी गयी और आनंद की रात्रि मनायी गयी। आनंद की रात्रि के लिये संस्कृत का शब्द है 'लौहड़ी'।'लौहड़ी' का मतलब होता है आनंद मनाना। उसी से पंजाब में 'लोहड़ी' बन गया। उसमें बहुत बड़ी अग्नि जलायी जाती है। मुहल्ले के सब लोग इकट्ठे होते हैं। उसमें जैसे प्राचीनकाल में यज्ञों में आहूति देते थे वैसे इसमें नयी फसल का अन्न भेंट किया जाता है। यह परम्परा पंजाब, दिल्ली तथा उत्तर प्रदेश के कुछ भागों में है।

उत्तरायण का प्रारम्भ-धरती के सूर्य की प्रदक्षिणा करने से और धरती के उत्तरी ध्रुव के सूर्य की ओर झुके रहने से छः ऋतुएं बनती हैं। सूर्य सबसे अधिक दक्षिण में मकर रेखा को छूकर फिर ऊपर उठना शुरू होता है। इसलिये सबसे ठण्डा दिन और सबसे छोटा दिन होने के बाद फिर जिस दिन से दिन पुनः बढ़ने शुरू होते हैं, दिनों में उष्णता आनी शुरू होती है, रात्रि घटनी शुरू होती है वह दिन मकर संक्रांति है।

यह उष्णता का काल, शुभ काल है, यह उत्थान का काल है, यह प्रगति का काल है, यह ऊष्मा का काल है, यह ज्योति का काल है, यह विकास का काल है। यह समुन्नति का काल है। यह बहुत ही शुभ लक्षणों वाला काल माना जाता है। प्राचीन काल में हमारी यही परम्परा रही, जितने सुकृत हों, शुभ कर्म हों, वे उत्तरायण के समय करने चाहिये और जो शुभ करने वाला व्यक्ति है वह उत्तरायण में ही शरीर त्याग करके जाता है।

परशुराम का प्रायश्चित-रामायण में एक और महान विभूति हुए, भगवान् परशुराम। और सहस्रार्जुन से संघर्ष हो गया परशुराम का। फिर परशुराम ने क्रोध में आकर २१ बार क्षत्रियों का नाश कर दिया।? तब उनके पितरों ने आकाशवाणी में कहा! परशुराम आप क्या कर रहे हो? इतना पाप मत करो। तुम्हें इस पाप का प्रायश्चित करना चाहिये। तब परशुराम ने तपस्या की। तपस्या करके इस पाप का प्रायश्चित किया, तो आकाशवाणी हुई- प्राग्ज्योतिषपुर में जहाँ सूर्य सबसे पहले उगता है- असम में जो अरुणाचल का प्रदेश है, जहाँ सूर्य का सबसे पहले उदय होता है- वहाँ पर एक कुण्ड है, उस कुण्ड में जाकर मकर संक्रांति के दिन स्नान करना। मकर संक्राति के दिन परशुराम ने अपने पाप विमोचन के लिये तप किया और तप के बाद पाप-प्रक्षालन के लिये उस कुण्ड में स्नान किया, जिसे आजकल **परशुराम कुण्ड** कहते हैं। मकर संक्रांति पर लाखों लोग आज भी परशुराम कुण्ड में स्नान करने जाते हैं।

पितरों का उद्धार- और एक महान् महत्व इसका है कि गंगा का अवतरण जो हुआ तो उसकाल में मकर संक्रांति के दिन गंगा गंगासागर तक पहुँची। उस सुन्दरवन के क्षेत्र में राजा भागीरथ के पूर्वज भस्म हुए पड़े थे। इसलिये गंगा लाने का वास्तविक मनोरथ मकर संक्रांति के दिन पूरा हुआ जब गंगा गंगासागर में पहुँची और राजा भागीरथ के पितरों का उद्धार हो गया। इसलिये गंगासागर का मेला आज के दिन ही लगता है। सालभर गंगासागर का द्वीप सागर में डूबा रहता है। इन्हीं चार छः दिनों के लिये पानी घटता है द्वीप प्रकट होता है। द्वीप के अन्दर कपिल मुनि का मन्दिर है। उनका प्राचीन आश्रम का स्थान है। वहाँ भी लाखों-लाख लोग जहाजों में जाकर तीर्थ में स्नान करते हैं।

जब सूर्य एक राशि को पार करके दूसरी राशि में प्रवेश करता है तब होती है संक्रांति। अतः वर्ष भर में ...शेष पृष्ठ १३ पर

एक विस्मृत हिन्दू सम्राट–हेमचन्द्र विक्रमादित्य

सम्राट पृथ्वीराज चौहान के बाद हिन्दू सम्राट के रूप में एक साल तक सम्राट धर्मरक्षक (खुशरू खान) ने शासन किया। उसके बाद विक्रमादित्य की उपधि धारण कर महाराज हेमचन्द्र दिल्ली के शासक बने। हालांकि वे केवल एक महीने तक ही राज कर सके लेकिन सुशासन, शौर्य, पराक्रम व रणनीतिक कुशलता में उस काल में उनकी बराबरी का कोई दूसरा शासक नहीं था। इस बार हम सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य की संक्षिप्त जानकारी दे रहे हैं–

सम्राट हेमचन्द्र विक्रमादित्य, भारतीय इतिहास के उन चुनिन्दा लोगों में से हैं जिन्होंने इतिहास की धारा मोड़कर रख दी। वे पृथ्वीराज चौहान (११७९–११९२) के बाद इस्लामी शासनकाल के मध्य दिल्ली के ऐसे हिन्दू सम्राट हुए जो विद्युत की भांति चमके और दैदीप्यमान हुए। उन्होंने अलवर (राजस्थान) के बिल्कुल साधारण से घर में जन्म लेकर एक व्यापारी, माप–तौल अधिकारी, 'दरोगा–ए–डाक चौकी', 'वजीर' (प्रधानमंत्री) और सेनापति होते हुए दिल्ली के तख्त पर राज किया और अपने अपार पराक्रम एवं २२ युद्धों में विजयी रहकर 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की। यह वह समय था जब मुगल एवं अफगान–दोनों ही दिल्ली पर राज्य के लिए संघर्षरत थे। यद्यपि हेमचन्द्र अधिक समय तक शासन न कर सके, तथापि इसे भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना अवश्य कहा जायेगा। हेमचन्द्र की तूफानी विजयों के कारण कई इतिहासकारों ने उनको 'मध्यकालीन भारत का नेपोलियन' भी कहा है।

जन्म तथा प्रारम्भिक जीवन

हेमचन्द्र, राय जयपाल के पौत्र और राय पूरणदास (लाला पूरणमल) के पुत्र थे। इनका जन्म आश्विन शुक्ल विजयादशमी, मंगलवार, कलियुगाब्द ४६०३, वि.सं. १५५८, ०२ अक्टूबर, १५०१ ई. को अलवर (राजस्थान) जिले के मछेरी नामक गांव में हुआ था। इनके पिता पहले पौरोहित्य कार्य करते थे, किन्तु बाद में मुगलों के द्वारा पुरोहितों को परेशान करने के कारण कुतुबपुर, रेवाड़ी में आकर नमक का व्यवसाय करने लगे।

हेमचन्द्र की शिक्षा रेवाड़ी में आरम्भ हुई। उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, फारसी, अरबी तथा गणित के अतिरिक्त घुड़सवारी में भी महारत हासिल की। साथ ही पिता के नये व्यवसाय में अपना योगदान देना शुरू कर दिया। अल्पायु से ही हेमचन्द्र, शेरशाह सूरी के लश्कर को अनाज एवं बन्दूक चलाने में प्रयोग होने वाले प्रमुख तत्व पोटेशियम नाइट्रेट अर्थात शोरा उपलब्ध कराने के व्यवसाय में पिताजी के साथ हो लिए थे। इसी बारूद के प्रयोग के बल पर शेरशाह सूरी ने हुमायूं को १७ मई, १५४० ई. में कन्नौज (बिलग्राम) के युद्ध में हराकर काबुल लौट जाने पर विवश कर दिया था। हेमचन्द्र ने उसी समय रेवाड़ी में धातु से विभिन्न तरह के हथियार बनाने के काम की नींव रखी, जो आज भी वहां पीतल, तांबा, इस्पात के बर्तन आदि बनाने के काम के रूप में जारी है।

दरोगा–ए–डाक चौकी

दिनांक २२ मई, १५४५ ई. को शेरशाह सूरी की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र जलाल खां ने इस्लामशाह सूरी के नाम से गद्दी सम्भाली और १५५४ तक दिल्ली पर शासन किया। पंजाब से बंगाल तक फैले हुए राज्य में अनेक अफगान– सरदारों ने मौके का लाभ उठाकर बगावत करनी चाही, लेकिन इस्लामशाह ने सबको पराजित कर दिया। इस्लामशाह ने एक प्रतिष्ठित व्यापारी की सिफारिश पर हेमचन्द्र को दिल्ली का 'बाजार– अधीक्षक' बनाया और बाद में उन्हें खाद्य एवं आपूर्ति विभाग का अधीक्षक तथा 'दरोगा–ए–डाक चौकी' के महत्वपूर्ण पद पर आसीन कर दिया। सैन्य गतिविधियों, प्रशासन और जनसामान्य के बीच एक अविच्छिन्न सम्पर्क–सेतु बनाकर वह आम नागरिक से लेकर सुल्तान तक की प्रशंसा के पात्र बन गये। अनेक अफगान–सरदारों की अनिच्छा के बावजूद इस्लामशाह ने हेमचन्द्र को छः हजार सवारों की मुख्तियारी दी और 'अमीर' का खिताब दिया।

दिनांक २२ नवम्बर, १५५४ को ग्वालियर में अपनी मृत्यु के पूर्व इस्लामशाह ने पंजाब से हेमचन्द्र को बुलाकर उनको दिल्ली की सैनिक और प्रशासनिक व्यवस्था सौंप दीं। इस्लामशाह की मृत्यु के बाद उसका बारह वर्षीय पुत्र फिरोजशाह सूरी गद्दी पर बैठा, किन्तु वह कुछ ही समय शासन कर सका। उसे शेरशाह के भतीजे मुहम्मद मुबारिज खान ने मौत के घाट उतार दिया और स्वयं आदिलशाह सूरी के नाम से बादशाह बन गया।

सेनापति हेमचन्द्र

आदिलशाह सूरी एक घोर विलासी और लम्पट शासक था और शासन की बिल्कुल भी परवाह नहीं करता था। फलस्वरूप अनेक अफगान–अधिकारियों ने उसके विरुद्ध बगावत शुरू कर दी। विद्रोह को दबाने और राजस्व वसूली के लिए आदिलशाह ने हेमचन्द्र को न केवल अपना 'वजीर' बनाया, वरन अफगान सेना का सेनापति भी नियुक्त कर दिया। इस प्रकार हेमचन्द्र पर शासन का भार डालकर आदिलशाह ने चुनार की राह पकड़ी। इस प्रकार सम्पूर्ण अफगान शासन हेमचन्द्र के हाथ में आ गया।

हुमायूं, जो पहले १५४० ई. में शेरशाह सूरी द्वारा हराकर काबुल खदेड़ दिया गया था, ने दुबारा हमला करके शेरशाह सूरी के भाई सिकन्दर सूरी को पंजाब में हराकर जुलाई, १५५५ ई. में दिल्ली पर अधिकार कर लिया। उस समय अफगान सरदार आपस में ही संघर्षरत थे। उत्तर भारत, मध्य भारत, बिहार और बंगाल तक उन्होंने अपने झण्डे बुलंद कर दिए। आदिलशाह के

सबसे बड़े शत्रु इब्राहीम खान ने कालपी में सिर उठा लिया था। तब आदिलशाह ने हेमचंद्र को बड़ी सेना और पाँच सौ हाथी तथा तोपखाना देकर कालपी भेजा। हेमचंद्र ने शीघ्रता से उसकी ओर कूच कर दिया। एक बहुत बड़ी लड़ाई हुई, जिसमें हेमचंद्र विजयी हुए और इब्राहीम भागकर बयाना चला गया। हेमचंद्र ने उनका पीछा किया और बयाना को घेर लिया। यह घेरा तीन महीने तक चलता गया। तभी हेमचंद्र को आदिलशाह का संदेश प्राप्त हुआ कि बंगाल के सूबेदार मुहम्मद ख़ान गोरिया (१५४५-१५५५) ने विद्रोह कर दिया है। अब हेमचंद्र ने बंगाल की ओर कूच किया और छप्परघाट नामक गांव के निकट मुहम्मद ख़ान गोरिया से लड़ा जिसमें मुहम्मद मारा गया। इसके बाद हेमचंद्र ने बंगाल में शाहबाज़ ख़ान को सूबेदार नियुक्त किया। इसके ६ माह बाद दिल्ली में हुमायूं की मौत(२७ जनवरी १५५६) का समाचार सुनकर उसने समझ लिया कि अब हिंदू राज्य के स्वप्न को साकार किया जा सकता है। हेमचंद्र ने मुगल साम्राज्य को उखाड़ फ़ेंकने के लिये दिल्ली की ओर कूंच कर दिया।

दिल्ली पर विजय व राज्यारोहण

६ अक्टूबर १५५६ को हेमचंद्र ने अपने सभी सेना अधिकारियों, अनेक पठान योद्धाओं, ४० हज़ार घुड़सवारों, ५१ बड़ी तोपों और ५०० छोटी तोपों के साथ दिल्ली के पास तुगलकाबाद में अपना डेरा जमाया। दिल्ली के सूबेदार तारदीबेग ख़ान ने उनका मुकाबला करने का असफ़ल प्रयास किया किंतु उसे अपने लगभग ३ हज़ार मुगल सैनिकों, अपार धन संपत्ति, १ हज़ार अरबी घोड़े तथा लगभग १५ सौ हाथियों से हाथ धोना पड़ा और स्वयं जान बचाकर भागना पड़ा। अगले ही दिन दिल्ली के पुराने किले में अफ़गान और हिंदू सेनानायकों की उपस्थिति में पूर्ण हिंदू धार्मिक विधि से उनका राज्याभिषेक हुआ और उन्हें विक्रमादित्य की उपाधि से विभूषित किया गया।

हुमायूं की मृत्यु के पश्चात् उसके १४ वर्षीय पुत्र अकबर को उसके कई सेनापतियों व संरक्षक बैरम ख़ान ने हेमचंद्र से युद्ध करने के लिए प्रेरित किया। ५ नवंबर १५५६ को पानीपत में हुए इस युद्ध में हेमचंद्र ने स्वयं अपनी सेना का नेतृत्व किया। जब हेमचंद्र स्वयं हाथियों के साथ आगे बढ़े तो मुगल सेना का बायां पक्ष हिल उठा। हवाई नामक एक विशाल हाथी पर सवार होकर सैन्य संचालन कर रहे हेमचंद्र ने ताबड़तोड़ तीरों की जो बौछार की उससे मुगल सेना भयभीत हो गई। वे भी शत्रुओं के तीरों से घायल तो थे किंतु सहसा एक तीर उनकी आंखों को चीरता हुआ मस्तिष्क में घुस गया और वे मूर्छित होकर हौदे में गिर पड़े।

हेमचंद्र के गिरने की सूचना मात्र से उनके सैनिक बुरी तरह भयभीत होकर युद्ध क्षेत्र से भाग खड़े हुए और अकबर को बैठे बिठाए निर्णायक सफ़लता प्राप्त हो गई। बाद में उनके मृत प्रायः शरीर को बैरम ख़ान ने अकबर के ही समक्ष टुकड़े- टुकड़े कर सिर को काबुल में और धड़ को दिल्ली में बेरहमी से दरवाज़ों पर लटकाया। इतना ही नहीं तो अकबर ने हेमचंद्र के सैनिकों और शुभचिंतकों के हज़ारों कटे सिरों का बुर्ज बनाया, उनकी संपत्ति पर कब्ज़ा कर उनके पिता राय पूरणदास के भी टुकड़े-टुकड़े कर डाले और उनका कुल नष्ट करने के लिए अलवर, रेवाड़ी, नारनौल, आनौड़ आदि क्षेत्रों में बसे हुए उनके सहयोगियों को चुन-चुनकर बंदी बना लिया।

महान राष्ट्रभक्त

अनेक इतिहासविदों ने हेमचंद्र विक्रमादित्य की महान राष्ट्रभक्ति तथा कुशल सैन्य संचालन का गुणगान करते हुए लिखा है कि चाहे उन्होंने मात्र एक महीने ही राज किया हो किंतु वह कालखण्ड भी भारतीय इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है। संयोगवश उनकी और उनके हाथी की आँख में तीर लग जाने से अकबर की किस्मत जाग गई।

मध्यकालीन और आधुनिक इतिहासकारों ने हेमचंद्र विक्रमादित्य के प्रति न्याय नहीं किया। युद्धक्षेत्र की एक दुर्घटना ने उनकी विजय को पराजय में बदल दिया अन्यथा संभवतः युद्ध का परिणाम दिल्ली में मुगलिया सल्तनत स्थापित करने की बजाय संपूर्ण भारत में हिंदू साम्राज्य की आधारशिला स्थापित करने के रूप में होता।

-विनोद बंसल, नई दिल्ली

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

यहाँ अपने देश से सम्बन्धित दस प्रश्न दिये हुए हैं। सोचें और उनके उत्तर दें। सभी प्रश्नों के सही उत्तर देने वाले अत्यंत बुद्धिमान माने जायेंगे तथा छह से नौ उत्तर देने वाले बुद्धिमान।

१. हर्षवर्धन के शासन काल में कौन सा चीनी यात्री भारत भ्रमण पर आया था?
२. राम-रावण युद्ध में लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर करने के लिए रामभक्त हनुमान लंका से किस प्रसिद्ध वैद्य को लेकर आये थे?
३. प्रसिद्ध सूक्त वाक्य 'सत्यमेव जयते'किस उपनिषद से लिया गया है?
४. सोने की लंका के नाम से प्रसिद्ध नगरी किस पर्वत पर स्थित थी?
५. प्रसिद्ध तीर्थ अमरनाथ भारत के किस प्रदेश में है?
६. विश्व प्रसिद्ध ब्रह्माजी का मंदिर राजस्थान में कहाँ स्थित है?
७. भारत के चार धामों में से दक्षिण में स्थापित धाम कौन सा है?
८. दुनियाभर का सबसे ऊँचा रेल पुल कहाँ बन रहा है?
९. भूदान आन्दोलन के प्रणेता कौन थे?
१०. महाभारत के रचनाकार का नाम बतायें?

उत्तर इसी अंक में हैं।

क्या कहते हैं दुनिया के हिन्दू

सरकार भी आतंकियों का साथ देती है

गत २१,२२ तथा २३ को दिल्ली में 'वर्ल्ड हिन्दू कांग्रेस' हुई थी। इसमें चालीस देशों के हिन्दू चिंतकों ने भाग लिया था। हिन्दू कांग्रेस में आये प्रतिनिधियों ने अपने देश की स्थिति और वहाँ के हिन्दू समाज की स्थिति के बारे में भी बताया। इस कांग्रेस में यजीदी भी आये थे जो 'इस्लामिक स्टेट' के आतंकी गुण्डों के अत्याचारों से त्रस्त थे। उनकी बात पूरी दुनिया में सुनी जायेगी इस आशा से वे दिल्ली आये। उनके प्रतिनिधि ने बताया कि उनकी एक हजार से अधिक लड़कियों का अपहरण हो गया है और आतंकी उन पर बर्बर अत्याचार कर रहे हैं। कुछ देशों के हिन्दुओं ने भी आप-बीती सुनाई। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं-

वहाँ हिन्दू, अब तक के सबसे बुरे दौर से गुजर रहे हैं। हर कदम पर हिन्दू-समाज का दमन किया जा रहा है। सरकार भी आतंकियों का साथ देती है। हिन्दुओं के जान-माल, बहू-बेटियों की इज्जत कहीं भी सुरक्षित नहीं है। बलात्कार, अपहरण, मतान्तरण, मंदिरों का विध्वंस और उनकी जमीनों पर कब्जे रोजमर्रा की बातें हो गई हैं। **–पंकज हल्देकर–ढाका (बांग्लादेश)**

संस्कृति बचाने की चुनौती– *बयान सुदेन (इंडोनिशिया)*

इंडोनेशिया में हिन्दू अल्पसंख्यक हैं, लेकिन बाली द्वीप में उनकी संख्या अच्छी खासी है। हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती अपनी पहचान और संस्कृति को बचाये रखने की है।

पहचान का संकट– इंकराजका (वियतनाम)

वियतनाम में 'चाम' हिन्दुओं की आबादी ७५ हजार है।उनकी सुरक्षा को कोई संकट नहीं है लेकिन गम्भीर चुनौती यह है कि वैश्वीकरण के इस दौर में अपनी हिन्दू परम्पराओं , भाषा, परिधान, पूजा-पद्धति आदि को कैसे सुरक्षित रखा जाये।

पंचांग- (माघ-कृष्ण पक्ष)

युगाब्द-५११६,विक्रमी-२०७१, शाके-१९३६
(६ से २० जनवरी २०१५ तक)

चतुर्थी व्रत(तिलकुटा चौथ)-८ **जनवरी**, मकर संक्रातिं, धनु मल-मास समाप्त- **१४ जनवरी** , षट्तिला एकादशी व्रत- **१६ जनवरी**, प्रदोष व्रत - **१८ जनवरी**, मौनी अमावस्या - **२० जनवरी**

चन्द्रमा की स्थितिः ६ से ८ जनवरी स्वराशि **कर्क** में ९-१० जन. सिंह, ११ से १३ जन. **कन्या** में, १४-१५ जन. **तुला**, १६ से १८ जन. नीच की राशि **वृश्चिक** में तथा १९-२० जन. को **धनु** राशि में गोचर करेंगे।

तमिलों की स्थिति खराब– *तोलियनाथन् (श्रीलंका)*

वहाँ तमिलों की स्थिति बहुत खराब है और कुछ स्थानों पर वे अभी भी शिविरों में रह रहे हैं। श्रीलंका में तमिलों के मानवाधिकार की रक्षा बहुत बड़ा प्रश्न है। श्रीलंका में इस समय ८ प्रतिशत आबादी हिन्दू है और ७२ प्रति. बौद्ध हैं। राजनैतिक दृष्टि से बौद्ध हिन्दुओं का साथ नहीं देते।

विहिप ने दिलाया सम्मान– *प्रो. गुना मगेशन (न्यूजीलैण्ड)*

विहिप न्यूजीलैण्ड के प्रयासों से न्यूजीलैण्ड में हिन्दू समाज की एक अलग पहचान बनी है। न्यूजीलैण्ड में हिन्दू समाज व माओरी समाज के विभिन्न संगठन विहिप के मंच पर आकर अपने को गौरवान्वित समझते हैं। वहाँ की सरकार विहिप को पूरा सम्मान देती है तथा सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु अनुदान भी देती है।

मतान्तरण का खतरा– रघु वेदिकुंदन *(मलेशिया)*

मलेशिया में करीब ५० लाख हिन्दू आबादी है और १० हजार मंदिर हैं। यह एक इस्लामी देश है इसलिये वहाँ मतान्तरण सबसे बड़ी चुनौती हैं। यदि पति-पत्नी में से किसी ने मतांतरण कर लिया (मुसलमान बन गया) तो उसके आधार पर तुरंत तलाक हो जाता है। यहाँ तक कि दूध पी रहे बच्चों को उनकी माँ की गोद से छीन लिया जाता है। भारत सरकार को दबाव बना कर वहाँ के हिन्दुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चहिए।

हिन्दू उद्यमी एकजुट– *डा. मनोज मोटवानी (हांगकांग)*

'हिन्दू इकॉनामिक फोरम' के माध्यम से दुनिया भर के हिन्दू उद्यमी एक मंच पर आ कर अपनी एकजुटता को मजबूत कर रहे हैं। अगले साल लंदन में होने वाली फोरम की बैठक इस काम में मील का पत्थर साबित होगी।

कोई एक मंच नहीं– *अनुपमा रारू (जर्मनी)*

जर्मनी में हिन्दुओं के पास ऐसा कोई मंच नहीं हैं, जहाँ से वे अपनी बात अन्य लोगों के सामने रख सकें। समस्या है कि यहाँ भी हिन्दू अपनी अलग-अलग पहचान; यानि गुजराती-बंगाली में बँटा है। इसलिये जरूरत इन सभी को एक मंच पर लाने की है। साथ ही युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कार भी प्रदान करने जरूरी हैं।

एक जुटता से खड़े हों– *बी.ए.परमादवती (आस्ट्रिया)*

'वर्ल्ड हिन्दू कांग्रेस' का प्रयोग हिन्दू समाज के प्रतिभाशाली लोगों को एक मंच पर एकत्र कर भविष्य परिवर्तन का एक बड़ा माध्यम बनेगा। जब तक हिन्दू समाज एकजुटता के साथ खड़ा नहीं होगा, विश्वपटल पर इसकी शक्ति को दुनिया स्वीकार नहीं करेगी। ❑

वनवासी कुम्भ में हजारों वनवासी और नगरवासी शामिल हुए

बीते २१ दिसम्बर को दिल्ली में नवासी रक्षा परिवार कुंभ' आयोजित या गया। जिसमें लगभग पाँच हजार वासी बन्धुओं सहित ४० हजार लोग म्मिलित हुए। श्री हरि सत्संग समिति, द्रप्रस्थ ने यह कुम्भ आयोजित किया ा। भारत माता मंदिर के पूज्य स्वामी त्यमित्रानंद गिरि सरसंघचालक भागवत ी, विहिप के संरक्षक श्री अशोक सिंहल था महामंत्री श्री चम्पतराय सहभागी हुए।

वनवासी क्षेत्रों की उन्नति तथा वहाँ वास करने वाले बन्धुओं की सुरक्षा के द्देश्य से यह कुंभ आयोजित किया गया ा। इसका प्रारम्भ एक प्रदर्शनी से हुआ। सका उद्घाटन विहिप के अन्तर्राष्ट्रीय हामंत्री श्री चम्पतराय ने किया। कुंभ रंगमंचीय कार्यक्रम हुए जिनकी प्रस्तुति वनवासी कलाकारों ने ही दी। प.बंगाल से आये कलाकारों ने 'महिषासुरमर्दिनी' नाम की रोमांचक नृत्यनाटिका प्रस्तुत की।

वनवासी क्षेत्र के कार्यकर्ताओं तथा शुभचिंतकों को सम्बोधित करते हुए सरसंघचालक जी ने कहा, कि हम विविधता को सहन ही नहीं करते बल्कि उसमें आनन्द का अनुभव करते हैं। उन्होंने कहा कि वनवासी समाज में आज भी सम्पूर्ण मानवता को प्रकाश देने की क्षमता है। वनबंधुओं को आज अवश्य शहरी समाज की सहायता की आवश्यकता है लेकिन बाद में वे भी 'देने वाले' बन जायेंगे।

डेढ़ सौ सालों से धर्मांतरण–इस अवसर पर श्री अशोक सिंहल ने कहा कि प्रलोभन और दबाव से जिनका धर्मांतरण किया गया है उनको फिर से गले लगाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि नौ करोड़ वनवासियों और १८ करोड़ वंचितों का पिछले डेढ़ सौ सालों से धर्मांतरण चल रहा है। इस पर अब रोक लगनी चाहिये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पूज्य स्वामी सत्यमित्रानंद गिरि जी ने कहा कि **जब कोई अपनी पराजय पचा नहीं पाता तब पीड़ा प्रकट होती है। घर-वापसी कार्यक्रमों का विरोध इसीलिये किया जा रहा है।**

श्रीगंगानगर में साहित्य परिषद की राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

श्रीगंगानगर में गत १३ व १४ दिसम्बर को अ.भा.साहित्य परिषद् की संगोष्ठी हुई। 'भारतीय साहित्य और कुटुम्ब' विषय पर हुई दो दिन की इस ोष्ठी में देश के दो सौ से अधिक प्रमुख साहित्यकारों ने भाग लिया। दो दिनों में उद्घाटन, समापन तथा अन्य सत्रों में मूर्धन्य साहित्यकारों ने उक्त विषय पर अपने विचार रखे। १३ दिसम्बर की रात एक बहुभाषी कवि-सम्मेलन आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध राजस्थानी कवि मोहन आलोक ने की। संगोष्ठी में क्षेत्र के चार वरिष्ठ साहित्यकारों को सम्मानित किया भी किया गया।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि महर्षि पाणिनी संस्कृत वि.वि. उज्जैन के कुलपति **प्रो.मिथिला प्रसाद त्रिपाठी** थे। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र तथा विश्व का हित करे, वह साहित्य है। भारतीय साहित्य तो देवताओं को भी अपने परिवार का अंग मानता है और मनुष्य को देव बनाने का प्रयास करता है।

परिषद के राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्रीधर पराड़कर ने कहा कि आजादी के बाद भारतीय साहित्य की दिशा बदल दी गई है। समाज को शाश्वत मूल्य देने वाले साहित्य को कुछ लोग साहित्य नहीं मानते, उसे साम्प्रदायिक घोषित कर अस्पृश्य बना देने का प्रयास करते हैं। उन्होंने कहा कि भौतिकता के कारण कुटुम्ब की धारणा को नुकसान पहुँचा है।

उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी के निदेशक प्रो.त्रिभुवन नाथ शुक्ल ने की। उन्होंने कहा कि कुटुम्ब एक महाभाव है, जब यह टूटता है तो सभी प्रभावित होते हैं और जब जुड़ता है तो मनुष्य विस्तार-विकास-उल्लास प्राप्त करता है।

साहित्यिक योगदान व सृजन सेवा के लिये एक सत्र में श्री जनकराज पारीक, मोहन आलोक, डॉ.मंगत बादल व ओम पुरोहित 'कागद' को सम्मानित किया गया। उद्घाटन समारोह में एक स्मारिका का विमोचन भी किया गया।

पृष्ठ १ का शेष... १२ संक्रांति आती है। १२ संक्रांतियों में कुछ संक्रांतियों का विशेष महत्व है क्योंकि उनके साथ बहुत बड़ा इतिहास जुड़ा हुआ है। उनमें से एक संक्रांति यह है मकर संक्रांति। और तीन महीने बाद आने वाली एक संक्रांति है जिसको हम मेष संक्रांति, वैशाख संक्रांति कहते हैं। इसलिये दो संक्रातियाँ बहुत महत्वपूर्ण है। इसी तरह कर्क संक्रांति भी बहुत महत्व की है।

क्रिसमस मकर संक्रांति का पर्व–मकर संक्रांति सूर्य पूजा का दिन है और पहले सारे यूरोप में सूर्यपूजा चलती थी। लगभग सौ वर्ष में मकर संक्रांति का जो पर्व है एक दिन आगे बढ़ जाता है। ११५ साल पहले १२ जनवरी को मकर संक्राति पड़ती थी। क्योंकि स्वामी विवेकानंद का जन्म मकर संक्रांति के दिन हुआ। इसलिये १८०० साल पहले जब ईसाइयत ने प्रवेश किया रोम में, तब सूर्य पूजा का यह पर्व २५ दिसम्बर को आता था।

इसलिये क्रिसमस नाम से जो पर्व ईसाई मनाते हैं ईसा के जन्म दिन के रूप में वह ईसा का जन्म दिवस नहीं है। वह वास्तव में मकर संक्रांति है। इस बारे में राधाकृष्णन ने अपनी पुस्तक Recovery Of Faith में स्पष्ट लिखा है। मकर संक्रांति के पर्व को ईसाइयों ने चुरा लिया है और क्रिसमस के नाम से प्रचारित किया है।

–हरवंश लाल ओबराय

(ओबराय समग्र से साभार)

स्वदेशी दिवस पर बाबू गेनू को याद किया

स्वदेशी वस्तुओं के लिए संघर्ष करते हुए शहीद होने वाले बाबू गेनू की पुण्य तिथि पर गत दिनों स्वदेशी जागरण मंच ने राजस्थान में कई कार्यक्रम आयोजित किये। बाबू गेनू मात्र २२ वर्ष की अल्पआयु में १२ दिसम्बर १९३० को स्वदेशी वस्तुओं के लिए संघर्ष करते हुये शहीद हो गये थे। इस देशभक्त का शहादत दिवस देश में 'स्वदेशी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

बीकानेर में इस अवसर पर दो दिवसीय स्वदेशी मेले का आयोजन किया गया। मेले के समापन पर मुख्य अतिथि स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय संगठन मंत्री कश्मीरी लाल थे। समापन सत्र में उन्होंने कहा कि 'स्वदेशी वस्तुओं' को अधिक से अधिक प्रोत्साहित करना होगा क्योंकि स्वदेशी के प्रोत्साहन से ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था आधारित देश को पुनः मजबूत बनाया जा सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि माता पिता को बच्चों का जन्मदिन भारतीय पद्धति से मनाना चाहिए। केक काटना, मोमबत्तियाँ बुझाना भारतीय संस्कृति नहीं है। मिट्टी के बर्तनों और खादी के उत्पादों को अधिक से अधिक प्रोत्साहित करने की बात भी उन्होंने कही।

इस मेले में स्वदेशी वस्तुओं की लोगों ने जमकर खरीददारी की। हस्तनिर्मित उत्पादों, साहित्य आदि का सैकड़ों लोगों ने अवलोकन किया। कार्यक्रम में बीकानेर के अलावा उदयपुर, नागौर, जोधपुर, जालौर और अलवर जिलों के स्वदेशी से जुड़े कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

गत १२ दिस. को जोधपुर ई... ने भी स्वदेशी दिवस आयोजित कि... सायंकाल जोधपुर स्थित जालौरी गेट ... भव्य और आकर्षक दीप माला भी सजाई गई।

गोरक्षा पर सीमाजन समिति का प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन

गत १८ दिसम्बर को जैसलमेर के जनसेवा समिति के सभागार में सीमाजन कल्याण समिति का प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन आयोजित किया गया। गो-सेवा का महत्व बताने के लिये यह सम्मेलन किया गया था। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता तारामठ के स्वामी प्रतापपुरी महाराज ने की। कार्यक्रम में आये प्रबुद्ध जनों को सम्बोधित करते हुये स्वामी जी ने कहा कि 'हिन्दू संस्कृति गाय पर टिकी है। हिन्दू धर्म के १६ संस्कार गाय के बिना अधूरे हैं। इसलिये इसे केवल अर्थ से नहीं जोड़ना चाहिए। गो-माता की सेवा करने से समस्त प्रकार के रोग और क्लेश हमसे दूर रहते हैं।'

ज्ञात हो कि सीमाजन कल्याण समिति द्वारा ३० गो शिविरों में ७६०० गाय-बैलों की सेवा की जा रही है। जैसलमेर स्थित रामदेवरा और देवीकोट में असहाय बैलों को संरक्षण देकर बूचड़खानों में जाने से बचाने का कार्य भी समिति द्वारा किया जा रहा है।

तात्या टोपे के जन्म की द्वि-शताब्दी मनाई गई

गत १३ दिसम्बर को 'इतिहास संकलन समिति' की उदयपुर इकाई ने तात्या टोपे के जन्म के दो सौ साल होने पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया। विश्व संवाद केन्द्र के सभागार में हुई संगोष्ठी में समिति के महामंत्री छगन लाल बोहरा ने बताया कि तात्या टोपे का नाम सुनते ही देशभक्तों का सीना गर्व से फूल जाता है। अखण्ड भारत की स्वतत्रंता के लिये तात्या टोपे ने उस समय संघर्ष किया जब भारत के अधिकांश राजा अंग्रेजों के सामने समर्पण कर चुके थे। ज्ञात हो कि तात्या टोपे भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के एक प्रमुख सेना नायक थे। अंग्रेज उनके नाम से ही घबराते थे। दो साल तक अंग्रेजी सत्ता को चुनौती देने के बाद वे गुप्त रूप से नेपाल चले गये।

उनके अभिन्न मित्र नारायण राव भागवत ने खुद को तात्या टोपे के रूप में गिरफ्तार करवा दिया। १८ अप्रेल १८५९ को शिवपुरी में मृत्यु-दण्ड पाने वाले तात्या टोपे नहीं बल्कि नारायण राव थे।

राव महेन्द्र सिंह सम्मानित

'अखिल भारतीय वंशावली संरक्षण ... संवर्द्धन संस्थान' के राष्ट्रीय अध्यक्ष महे... सिंह बोराज को संघ के सरसंघचाल... भागवतजी ने नागपुर में एक कार्यक्रम ... सम्मानित किया है।

पिछले दिनों नागपुर में धर्मजागर... समन्वय विभाग का अखिल भारतीय ती... दिवसीय अभ्यासवर्ग सम्पन्न हुआ। अभ्या... वर्ग के समापन कार्यक्रम में उल्लेखनी... कार्य करने वाले देशभर के कु... कार्यकर्ताओं को संघ के सरसंघचाल... ने सम्मानित किया। उनमें बोराज के रा... महेन्द्र सिंह भी थे। उनके प्रयासों से भा... संख्या में वंशलेखक अपने परम्परागत का... से पुनः जुड़े हैं।

छबड़ा के विद्या मंदिर की पाकिस्तान के बच्चों को श्रद्धांजलि

गत १५ दिसम्बर को पाकिस्तान के पेशावर स्थित सैनिक स्कूल में तालिबानी आत्मघाती हमलावरों ने १३६ बच्चों की निर्मम हत्या कर दी थी। उन्हीं मासूम बच्चों को श्रद्धांजलि देने छबड़ा के आदर्श विद्या मंदिर के प्रांगण में एक शोक सभा रखी गई। इसमें दिवंगत बच्चों की पवित्र आत्मा की शांति के लिए सभी ने २ मिनट का मौन रखा। इस श्रद्धांजलि सभा में विद्यालय परिवार के सभी विद्यार्थियों सहित शिक्षक गण मौजूद थे।

ऐसा ही एक श्रद्धांजलि का कार्यक्रम पटना में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद द्वारा रखा गया। 'बिहार राज्य स्तरीय छात्र नेता सम्मेलन' में भी मासूम बच्चों को श्रद्धांजलि देते हुए २ मिनट का मौन रखा गया। अन्य कई संगठनों ने भी शोकसभा आयोजित की।

प्रसिद्ध भक्त-कवि तिरुवल्लुवर

तिरुवल्लुवर का जन्म ईसा से ३०० वर्ष पूर्व तमिलनाडु देश के मलियापुर गाँव में निवास करने वाले 'भगवन्' नामक ब्राह्मण के यहाँ हुआ। इनकी माता 'आदि' तथाकथित अछूत समाज की थीं जिनके साथ भगवन ने विवाह किया था। महाबलीपुरम से २० कि.मी. उत्तर में यह गाँव बसा हुआ है। इनके पिता व पूर्वज वहाँ के राजाओं के यहाँ मंत्री रहे थे। तिरु का अर्थ तमिल में संत होता है। इसलिये तिरुवल्लुवर का अर्थ हुआ संत वल्लुवर। वल्लुवर एकदम सहज व सरल स्वभाव के तथा भगवान् में आस्था रखने वाले थे। राजकाज के पैतृक कार्य में रुचि न लेकर उन्होंने बुनकर का व्यवसाय प्रारम्भ किया। वे निर्लेप, निर्विकार, निर्मोही और निरंहकारी स्वभाव के थे। इनका विवाह 'वासुकी' नाम की कन्या से हुआ जो पति के अनुकूल आचरण करने वाली श्रेष्ठ पतिव्रता थी।



कुछ लोगों में इस बात को लेकर बहस छिड़ी हुई थी कि चारों आश्रमों में गृहस्थ बड़ा है या संन्यास आश्रम। अनिर्णय की स्थिति में ठीक उत्तर जानने के लिए वे तिरुवल्लुवर के पास आये और अपना प्रश्न कह सुनाया। वह दोपहर का समय था। वचन की तुलना में कर्म से उपदेश देने के स्वभाव वाले संत ने जोर से आवाज देकर वासुकी से दीपक जलाकर लाने को कहा। उन्होंने यह भी कहा कि मुझे सुई में धागा डालना है दिखाई नहीं दे रहा है। इस प्रश्न को सुन वहाँ आये जिज्ञासु आश्चर्यचकित थे। वहीं बिना देर और प्रतिकार किये प्रसन्न पत्नी ने दीपक जलाकर सामने रख दिया और पुनः प्रसन्न हो अपने काम में लग गयी। बिना कुछ कहे ही उन्होंने बता दिया- समझा दिया कि जिस घर में पति-पत्नी में इतनी समझ है तालमेल है वहाँ गृहस्थ आश्रम ही श्रेष्ठ है।

तिरुवल्लुवर भक्त के साथ एक कवि भी थे। एलेल शिंगन नाम के प्रसिद्ध व्यापारी के उद्दण्ड पुत्र को अर्थ, धर्म और काम की शिक्षा देने के लिए 'तिरूक्कुरल' नामक अमर ग्रंथ की रचना उन्होंने की। कुरल ड़ेढ़ पंक्ति का होता है। इस ग्रंथ में १३३० कुरल (दोहे) १३३ अध्यायों में लिखे गये हैं। सन् १७३० में इसका लैटिन भाषा में अनुवाद हआ। इसके बाद अंग्रेजी तथा विश्व की अनेक भाषाओं में सम्यक् जीवन की शिक्षा देने वाले ग्रन्थ का अनुवाद हुआ। इस पवित्र ग्रन्थ को दक्षिण का 'वेद' माना जाता है। मलियापुर गाँव में आज भी उनकी पत्नी की स्मृति में मन्दिर बना हुआ है। कन्याकुमारी में स्वामी विवेकानन्द स्मारक के पास की चट्टान के ऊपर इस प्रसिद्ध कवि और संत की यादगार में १०८ फीट उँची प्रतिमा भी स्थापित की गई है, जो अतीत के गौरव का स्मरण दिला रही है।

आगामी पक्ष (१६ से ३१ जनवरी २०१५) के विशेष अवसर

(माघ कृष्ण ११ से माघ शुक्ल १२ तक)

१७ जनवरी (१८७२)- रामसिंह कूका के गोभक्त शिष्यों का बलिदान।

१९ जनवरी (१५९७)-महाराणा प्रताप की पुण्य-तिथि।

२० जनवरी (१६९६)- संता जी घोरपड़े ने हिम्मत खाँ का पुत्रों सहित वध किया- हिन्दवी स्वराज्य पर आक्रमण करने वाले मुगल सेनापति हिम्मत खाँ की छावनी पर हमला कर सन्ता जी घोरपड़े ने उसका पुत्रों सहित वध कर दिया। फलस्वरूप औरंगजेब की सेना को भागना पड़ा।

२१ जनवरी (१९४५)- रास बिहारी बसु का निधन

२१ जनवरी (१९४३)-हेमू कालाणी की शहादत।

२३ जनवरी (१८९७)-नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म दिवस।

माघ शुक्ल ५(इस बार २४ जनवरी)-बसंत पंचमी, रामसिंह कूका का जन्म दिवस, निराला जयंती, वीर हकीकत राय का बलिदान, पृथ्वीराज चौहान का बलिदान।

२६ जनवरी-गणतंत्र दिवस

२६ जनवरी (१९९५)-रानी माँ गाइदिन्ल्यू का जन्म दिवस।

माघ शुक्ल ७(इस २६ जनवरी)-माधवाचार्य जयंती, भगवान देवनारायण जयंती।

२८ जनवरी (१८६५)-लाला लाजपत राय का जन्मदिवस।

-भगिनि निवेदिता इंग्लैण्ड छोड़ कर भारत आई (१८९८)

२९ जनवरी (१९२२)-संघ के चौथे सरसंघचालक प्रो. राजेन्द्र सिंह जी का जन्म दिवस।

माघ शुक्ल १०(२९ जनवरी)-जयशंकर प्रसाद की जयंती।

३० जनवरी (१९४८)- पूज्य महात्मा गाँधी की पुण्यतिथि।

माघ शुक्ल ११(इस बार ३० जनवरी)-सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य का राज्याभिषेक दिवस (युगाब्द २७८१, ३२१ ई.पू.)

चमकौर के अभिमन्यु

मित्रों, आज से करीब तीन सौ साल पहले की बात है। मुगल बादशाह औरंगजेब के चंगुल से अपनी मातृभूमि को निकालने के लिये पूर्व-पश्चिम और उत्तर दक्षिण सभी स्थानों पर राष्ट्रवादी शक्तियाँ खड़ी हो गई थीं । उत्तर में गुरु गोबिन्द सिंह विदेशी मुगलों को ललकार रहे थे। औरंगजेब ने सिपहसालार सौद खाँ को एक बड़ी सेना के साथ पंजाब भेजा, पर वह भी सिखों की मार खा कर भाग खड़ा हुआ। मुगलों को एक के बाद एक करारी मात मिल रही थी। इससे खार खाकर मुगल सरदार वजीर खॉ ने लाहौर, सरहिन्द तथा कश्मीर के सूबेदारों के साथ मिल कर आनन्दपुर पर आक्रमण का षड़यंत्र रचा। गुरु गोबिन्द सिंह भी समझ गये कि अब मुगलों का निर्णायक वार होगा। अतः उन्होंने भी पूरे क्षेत्र के 'सिंहों' (सिखों) को आनन्दपुर में एकत्र किया तथा मोर्चेबन्दी शुरु कर दी। लोहागढ़, केशवगढ़, आनन्दगढ़, फतेहगढ़ तथा आनन्दपुर में 'सिंहों' को तैनात कर इन किलों की सुरक्षा व्यवस्था मजबूत कर दी गई।

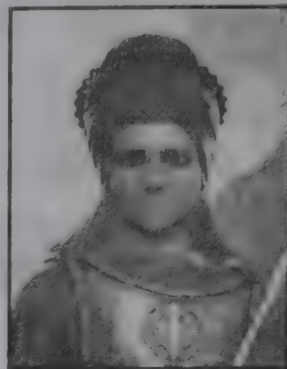


घेरेबन्दी- वजीर खाँ 'जिहाद' का नारा लगाता हुआ रोपड़ में आ पहुँचा। वहाँ से उसने सतलज पार की तथा आनन्दपुर पर हमला कर दिया। कई दिनों तक युद्ध चलता रहा। गुरु 'सिंहों' के सामने मुगलों की कोई चाल सफल नहीं हो रही थी, उल्टे बड़ी संख्या में तुर्क मारे गये थे। युद्ध में सफलता मिलते न देख वजीर खाँ ने अब आनन्दपुर की घेराबन्दी कर दी। खालसों ने अब रात के समय दुश्मनों पर छापामार हमले शुरु कर दिये। दिन भर मोर्चे पर जमे रहना और रात को किलों से निकल कर छापामार हमला करना, इस तरह गुरु गोविन्द सिंह के धर्म-रक्षक सैनिक रात-दिन जूझ रहे थे।

आठ महीने के बाद गुरु गोबिन्द सिंह और उनके सैनिक भीषण युद्ध कर रहे थे। राशन पानी खत्म हो चुका था। किले में बेचैनी फैलने लगी। गुरु गोबिन्द सिंह ने आनन्दपुर छोड़ने का फैसला किया। एक रात वे अपने परिवार व कुछ सैनिकों के साथ चुपचाप आनन्दपुर से निकल गये। अभी वे कीरतपुर तक ही पहुँच पाये थे कि दुश्मन को उनके निकलने का पता लग गया। वजीर खाँ ने तुरन्त सेना लेकर गुरु जी का पीछा शुरू किया। सरसा नदी के किनारे मुगल सेना ने उनको घेर लिया।

पीछे मुगल सेना और सामने उफनती हुई सरसा। परिस्थिति विकट थी। खालसो ने एक साहसपूर्ण योजना बनाई। सैनिकों की एक टुकड़ी को मुगल सैनिकों को रोकने का काम दिया गया। एक दूसरी टुकड़ी ने गुरु के परिवार को सुरक्षित नदी पार कराने का जिम्मा लिया। अब भीषण वेग से बह रही सरसा में गुरु गोविन्द सिंह व उनके साथी अपने घोड़ों के साथ उतर पड़े। उधर दशमेश गुरु के बड़े पुत्र अजीत सिंह नदी के इस पार वजीर खाँ की फौज से दो-दो हाथ करने लगे। जब अजीत ने देखा कि गुरु जी नदी पार कर ग हैं तो उसने भी विकराल सरसा में घोड़ा डाल दिया।

सरसा को पार करने में गुरुजी का परिवार बिछुड़ गया। गुरु की माता गूजरी जी अपने दो छोटे पोतों जोरावर सिंह तथा फते सिंह के साथ अलग हो गईं। गुरु जी ने अपनी दोनों पत्नियों, मात सुन्दरी जी व माता साहिब कौर को दिल्ली भेज दिया। सौ सैनिक और पुत्र अजीत सिंह व जुझार सिंह के साथ दशम गुरु रोपड़ क ओर चल दिये। रोपड़ में आस-पास के पठान उनको पकड़ने के लिए तलवार लि खड़े थे। गुरु जी के शिष्यों ने पठानों क देखा तो उन पर टूट पड़ें। घनघोर युद्ध हुअ और पठानों का मान-मर्दन करते हुए दशम गुरु बूड़माजरा होते हुए सायंकाल चमकौ पहुँच गये। उस समय उनके साथ मात्र चालीस सैनिक बचे थे। चमकौर के लोगों ने गुरु जी के स्वागत में पलक-पाँवड़े बिछा दिये।



हवेली गढ़ बनी-चमकौर के बीचों-बीच एक बड़ी सी हवेल थी। गुरु गोविन्द सिंह और उनके साथियों को उसी में ठहराया गया उधर मुगल सेना भी गुरु जी का पीछा करते हुए चमकौर आ पहुँची दूसरे दिन सुबह वजीर खाँ ने गढ़ी पर हल्ला बोल दिया। वजीर ख के आगे बढ़ते ही गढ़ी में मोर्चा सम्भाले सैनिकों ने उस पर तीरों और गोलियों की बौछार कर दी। भारी संख्या में मुगल मारे गये। वजीर खाँ को पीछे हटना पड़ा।

अब वजीर खाँ ने गढ़ी के मुख्य द्वार को निशाना बनाया। बड़ी-बड़ी ढालों में अपनों को छिपाये हुए विधर्मी मुगल लकड़ी के लट्ठे को लेकर दरवाजे को तोड़ने के लिए बढने लगे। गुरु जी शत्रु की ये सब गतिविधियाँ देख रहे थे। मुख्य द्वार को बचाने के लिए अब उन्होंने अपने पाँच योद्धाओ को बाहर निकल कर हमला करने के लिए कहा। पाँचों योद्धा काल बन कर मुगलों पर टूट पड़े। एक-एक सिख वास्तव में ही सवा लाख के बराबर प्रतीत हो रहा था। अनेक दुश्मनों को यमलोक भेजकर वे पाँचों भी बलिदान हो गये।

एक जत्था बलिदान हुआ तो दूसरा आया, दूसरे के बाद तीसरा और फिर चौथा। सैकड़ों मुगलों को मार कर गुरूदेव के बीस योद्धा वीरगति को प्राप्त हो गये। अब गुरुजी के बड़े पुत्र अजीत सिंह सामने आये और बोले-'' पिताजी माताएं जिस क्षण के लिए अपने पुत्रों को जन्म देतीं हैं वह क्षण आ पहुँचा है। अब मुझे मातृभूमि का ऋण चुकाने तथा आक्रमणकारियों को दण्ड देने का अवसर दीजिए। मैं इन लुटेरों को रणचण्डी की भेंट चढ़ाता हूँ।''

मातृभूमि का ऋण-अजीत की आयु उस समय केवल अठारह वर्ष की थी। पिता ने उन्हें छाती से लगा लिया,फिर अपने हाथ से उसे कवच पहनाया, तलवार बाँधी और शत्रु से दो-दो हाथ

गुड़ है गुणों से भरपूर

ईख का वर्णन आयुर्वेद में खूब आया है। ईख की खेती आदिकाल से होती आई है। जब सिकन्दर भारत आया था तो लोगों को गन्ना चूसते देखकर हैरान हो गया। एक दिन उसके मंत्री ने उसे एक गन्ना ला कर दिया। पहले वह सोचता था कि लकड़ी क्यों चूसते हैं यहाँ के लोग, परन्तु जब उसने खुद उसे चूसा तो मंत्रमुग्ध सा हो गया। गद्गद एवं भावविभोर होकर बोला- '' प्रकृति का यह अद्भुत करिश्मा अपने में बेमिसाल है। कुदरत ने इस डण्ठल में कितना शहद भर रखा है।'' इसी रस से बनते हैं गुड़, शक्कर व चीनी।

ईख के रस को और अधिक पकाने पर गाढ़ा ढेले के समान जो रूप होता है उसे गुड़ कहते हैं। प्राचीन काल से गुड़ का मांगलिक द्रव्य के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है। गणेश पूजन में गुड़ और नारियल का नैवेद्य और आहूति देने का विधान है। शुभ कार्य आरम्भ करने से पहले गुड़ खाना शगुन माना जाता है। गुड़ मिठाई का भी काम करता है। इसे 'शिशुप्रिय' भी कहा जाता है। शारीरिक श्रम करने वालों को गुड़ से शक्ति व ऊर्जा मिलती है। चरक के अनुसार गुड़ रक्त, मांस, मज्जा व मेद वर्धक पदार्थ है। खून की कमी दूर करने में यह बहुत उपयोगी है। गुड़ त्रिदोशनाशक, (वात,पित्त, कफ) प्रचण्ड शक्तिदाता और पाचक पदार्थ है। एक साल पुराना गुड़ उत्तम माना जाता है। गुड़ के कुछ घरेलू रोग-नाशक उपयोग इस प्रकार हैं-

* १० ग्राम अदरक के साथ २० ग्राम गुड़ खाने से कफ दूर होता है।

*आधे चम्मच बड़ी हरड़ के साथ १५ ग्राम गुड़ लेने से पित्त का नाश होता है। एक चुटकी सौंठ के साथ १५ ग्राम गुड़ खाने से वात विकार दूर होते हैं।

* सर्दी जुकाम में ७ काली मिर्च के साथ ही एक डली गुड़ खाने से आराम मिलता है।

* श्वास रोग में १/२ चम्मच सरसों के तेल के साथ ३० ग्राम गुड़, अतिसार में १चम्मच बेल गिरी चूर्ण के साथ २० ग्राम गुड़, मूत्र शुद्धि के लिए दूध में गुड़ मिलाकर सेवन करना चाहिए।

* गुड़ में पुष्टिवर्धक सभी गुण मौजूद रहते हैं, इसीलिए चैत्र (मार्च-अप्रेल) माह को छोड़कर पूरे साल गुड़ के साथ दूध लिया जाता है। इसमें कैल्शियम, ताम्बा, लौह व फास्फोरस अच्छी मात्रा में पाया जाता है। गुड़ अनेक रोगों में फायदेमंद होता है।

* भोजन करने के बाद गुड़ खा लेने से भोजन शीघ्र पचता है और गैस भी नहीं बनती।

* यदि आप हिचकियों से परेशान हो तो पुराने से पुराने ३० ग्राम गुड़ में पिसी हुई चुटकी भर सौंठ मिलाकर कुछ देर सूँघने से हिचकियाँ बंद हो जायेंगी।

* सर्दी के प्रारम्भ में गुड़ व काले तिल के लड्डू कुछ दिन खा लें तो सर्दी, जुकाम, खांसी आदि रोगों से बचे रहेंगे।

* सूखी खाँसी सता रही हो तो सरसों के तेल में गुड़ मिलाकर चाटें।

* हृदय की दुर्बलता में खाने के बाद थोड़ा सा गुड़ खाने से शक्ति मिलती है।

* आधे सिर का दर्द परेशान कर रहा हो तो एक हिस्सा गुड़ और आधा हिस्सा घी मिलाकर खा लें।

* सर्दी लग जाये तो एक चम्मच घी में १५ ग्राम गुड़ व चुटकी भर सौंठ भूनकर दो दिन लगातार दिन में चार बार लें।

* गठिया बाय में चुटकी भर सौंठ का चूर्ण २० ग्राम गुड़ के साथ भून कर प्रातः सायं खा लें।

☞ करने की अनुमति दे दी। अजीत सिहं पाँच योद्धाओं के साथ बाहर निकले और देश तथा धर्म के दुश्मनों पर टूट पड़े। बाबा अजीत सिंह का रणरंग देख कर मुगल फौज में खलबली मच गई। वजीर खाँ ने यह देखा तो अपने घुड़सवारों को चारों ओर से अजीत को घेर लेने का आदेश दे दिया। साक्षात् महाभारत का दृश्य उपस्थित हो गया। चारों तरफ से घिर जाने के बाद भी अभिमन्यु की तरह अजीत सिंह अपने भाले और तलवार से मुगलों को यमलोग पहुँचा रहे थे। चमकौर की रणभूमि मुगलों की लाशों से पट गई। बाबा अजीत सिंह के शरीर पर दसियों घाव हो गये। उनके साथ के योद्धा भी इसी प्रकार लुहलुहान थे अन्त में वीर की तरह लड़ते हुए अजीत सिंह अपने साथियों सहित वीरगति को प्राप्त हो गये।

गुरु गोबिन्द सिंह ने अपने पुत्र की वीरता देखी तो उनका मस्तक गर्व से ऊँचा हो गया। बाबा अजीत सिंह के अनुज जुझार ने अपने भाई को गौरवमय बलिदान देखा तो उनके भुजदण्ड भी फड़कने लगे। वे अपने पिता के सामने गये और युद्ध की आज्ञा माँगी। जुझार सिंह ने अभी सोलह बसंत ही देखे थे, पिता ने उनके हाथ में भी तलवार थमा दी और मुगलों को सबक सिखाने की आज्ञा दे दी।

बाबा जुझार पिता के चरण स्पर्श कर जाने लगे। उन्हें बड़ी देर से प्यास लगी हुई थी। एक सैनिक से उन्होंने पानी पिलाने को कहा- गुरूजी ने यह सुना तो कहा, '' **पुत्र अब पानी से नहीं आक्रमणकारी यवनों के रक्त से ही अपनी प्यास बुझाओ।''**

पुत्र ने पुनः अपना सिर नवाया और दुगने उत्साह से रणभूमि में कूद पड़ा। जिधर उसकी तलवार निकलती यवनों का सफाया हो जाता । जुझार सिंह की अद्भुत वीरता को देख कर मुगल सरदार भी दंग रह गये। आखिर सब गीदड़ों ने उस सिंह-शावक को भी घेर लिया। जुझार का शरीर घावों से भर गया, फिर भी उसकी तलवार अपना जौहर दिखाती रही। अंत में अनेकों यवनों को मौत के घाट उतार चमकौर का दूसरा अभिमन्यु भी 'सत् श्री अकाल' का घोष कर मातृभूमि के लिए अपना जीवन समर्पित कर गया। ❑

उत्तरः -सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी- *व्हेनसांग, सुषेण, मुंडक, त्रिकूट, जम्मू-कश्मीर, पुष्कर, रामेश्वरम् धाम, भारत (कश्मीर) में, आचार्य विनोबा, वेदव्यास।*

जयपुर में 29वाँ बिना ऑपरेशन घुटना-दर्द निवारण शिविर

दिनांक 5-6 फरवरी 2015 (स्थान सीमित शीघ्र रजिस्ट्रेशन करवायें)

जन-कल्याण ट्रस्ट, जयपुर की ओर से बिना ऑपरेशन 29वाँ घुटना-दर्द निवारण शिविर आगामी **5 व 6 फरवरी, 2015 को स्थानीय परमानन्द भवन, राम मंदिर (आदर्श नगर) में आयोजित किया जा रहा है।** शिविर में **घुटनों के दर्द का इलाज 'पोली सेन्ट्रिक नी-ब्रेस' विधि से किया जायेगा।** एलौपेथी में इसका एकमात्र उपाय घुटना-प्रत्यारोपण है। यह बहुत खर्चीला है तथा आम आदमी के लिए तो यह सम्भव ही नहीं है। भावनगर (गुजरात) के सुप्रसिद्ध चिकित्सक विजय नायक D.P.O.E. (Bom.), F.R.I.C.E. (U.S.A.), C.D.E.F.L.C.O.P. (London), M.I.S.P.O. (Denmark), M.R.C.I., M.O.P.S.I. ने घुटनों के दर्द के लिये उक्त नाम का एक यंत्र बनाया है। इस नी-ब्रेस को घुटनों पर आसनी से बाहर से लगाया जाता है। इसके लगाने से दर्द धीरे-धीरे कम होने लगता है और व्यक्ति पहले की तरह चलने-फिरने लगता है। इस यंत्र को हर रोज सुविधानुसार लगाया, हटाया जा सकता है। इसी प्रकार यह कैम्प पूरे भारत के मुख्य शहरों (राजस्थान में केवल जयपुर) में लगता है। जन-कल्याण ट्रस्ट की जानकारी के अनुसार अब तक जयपुर, कोटा, उदयपुर, जोधपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, सीकर, भरतपुर, अजमेर, भीलवाड़ा, रोहतक, करनाल, चंडीगढ़, हिसार, गुड़गांव, दिल्ली कई स्थानों के व्यक्ति इससे लाभ उठा चुके हैं। इस कैम्प का आयोजक PNRS सोसायटी, भावनगर, गुजरात द्वारा किया जाता है।

केम्प की पूरी जानकारी ध्यान से पढ़ें

- केम्प दिनांक 5 व 6 फरवरी को लगेगा।
- रजिस्ट्रेशन 22 दिसम्बर से 4 फरवरी तक रोज 2.30 से 6.00 बजे तक करवा सकते हैं।
- स्थान - पंजाब इन्जिनियरिंग वर्क्स, A-30, बाईस गोदाम इण्डिस्ट्रीयल एरिया, जयपुर-302006
- रजिस्ट्रेशन शुल्क 100/- रूपये (Not Refundable)
- मो. 9001898810, 9829050443
- पुराने केस केवल 5 फरवरी 2015 को प्रात: 9.00 बजे से 12.00 बजे तक कैम्प के स्थान पर ही देखे जायेंगे।

कैम्प का स्थान व समय

-:: कैम्प का स्थान ::-

राम मन्दिर, परमानन्द भवन, भाटिया भवन के सामने, राजापार्क, जयपुर-302004

-:: समय ::-

प्रात: 9.00 बजे से 12.00 बजे तक

एवं सायं 3.30 बजे से 5.30 बजे तक

1. उपचार में केवल दो दिन का समय लगेगा।
2. परामर्श के समय Latest X-ray (Knee Joint AP & Lateral) दोनों घुटनों का साथ लावें।
3. उपचार वाले दिन रसीद अवश्य लावें।

जो व्यक्ति जयपुर नहीं आ सकते हैं वे 100/- रूपये ICICI BANK (AVM BRANCH) जयपुर के खाता संख्या 674301422737 में जमा करा सकते हैं या ड्राफ्ट जन-कल्याण के नाम से C/O पंजाब इन्जिनियरिंग वर्क्स, A-30, बाईस गोदाम इण्डिस्ट्रीयल एरिया, जयपुर-302006 के पते पर भेज सकते हैं। अगला कैम्प 6 महीने बाद लगेगा। विस्तृत जानकारी के लिए : मो. 9001898810, 9829050443

रजिस्ट्रेशन शीघ्र करवायें - स्थान : पंजाब इन्जिनियरिंग वर्क्स, A-30, बाईस गोदाम इण्डिस्ट्रीयल एरिया, जयपुर-302006 मो. 9001898810, 9829050443

सुल्तान अल्लाउद्दीन खिलजी विशाल सेना लेकर 28 जनवरी 1303 ई. को दिल्ली से निकल पड़ा...

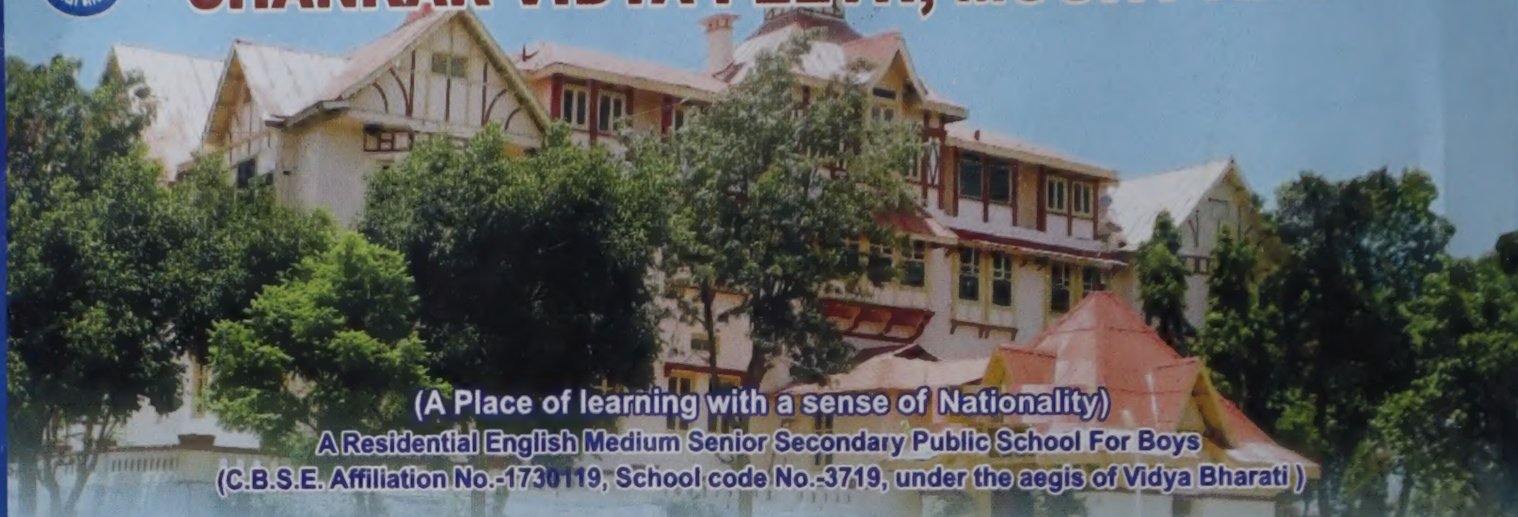




आर.एन.आई.पंजीयन क्र.४८७६०/८७
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY/ २०२/२०१५-१७
अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस सं
JAIPUR CITY/WPP - ०१/२०१५-

ॐ

ADARSH VIDYA MANDIR
SHANKAR VIDYA PEETH, MOUNT ABU



SALIENT FEATURES

100% result CBSE Board ...

- ★ The school is the modern concept of our age old Gurukul tradition.
- ★ Value based education guided by principles of Vedas.
- ★ Lush green campus situated away from din and bustle of the city.
- ★ Well Qualified, experienced and dedicated faculty.
- ★ Spacious Classrooms having LCD projectors and smart class enabled facilitation.
- ★ Bridge enrichment classes for slow learners.
- ★ State of art, Basketball, Badminton and Tennis court.
- ★ Indoor games and seven play grounds with sufficient equipments and sports materials.
- ★ Focus on Integral Development of the child.
- ★ Physical, Moral, Spiritual, Sanskrit & Sanskriti, Music, Art & Craft
- ★ E-class room and well furnished computer lab.
- ★ Hostel facilities with homely atmosphere
- ★ Satvik (Pure Vegetarian), delicious food.

AVM-SIP is a School Integrated Program
(Schooling + Competitive exam preparation)

School + Coaching + Hostel (Class XI & XII Science stream only)

Salient Features of AVM-SIP Batch

- ★ Finest Teachers & Teaching Methodology.
- ★ Online Test Engine.
- ★ Video Module of Lectures
- ★ Smart Classes with Educomp support.
- ★ Time Line Programs.
- ★ English language Strengthening.



Teaching Methodology

- ★ Concept Clearings Classroom Sessions(CCS).
- ★ Doubt Removal Sessions (DRS)
- ★ Daily Problems Practicing(DPP)
- ★ Exhaustive Study Material (ESM)
- ★ Regular Test Series –Online & Offline (RTS)
- ★ Batch Re-Shuffling Through Monthly Test.



ADMISSION ANNOUNCEMENT 2015-2016



1. **For limited seats only in secondary section and class XI Science stream.**
2. **Eligibility test will be conducted on 29th March 2015, Sunday at 11.00 am at Mount Abu & Other Centers mentioned below :-**
   - **ADARSH VIDYA MANDIR (Sr. Sec.),** Raja Park, Ramgali No.-1 - Jaipur Ph.No. : 0141-2653386
   - **'SHRUTAM' VIDYA BHARATI, Jodhpur** Prant, Kamla Nehru Nagar – Jodhpur Ph.No.-0291-2757941
   - **VIDYA NIKETAN (Sr. Sec.)** Banswara (Raj.)Ph.-02962-24
   - **Sharda Bal Niketan, Sr. Sec. School** Shardapuram – Nagour (Raj.) Ph.No.-01582-240723
   - **Vidya Niketan, Sr. Sec.School** Hiran Magri, Sector-4, Udaipur (Raj.) Ph.-0294-2460984
   - **Vidya Bharati Gujarat P** 6-B, Hari Nagar Society, Ar Ahmedabad (Gujrat) Ph.N
3. **Prospectus and Syllabus with model question papers for eligibility test can be obtained by sending a dem in favour of "PRINCIPAL, ADARSH VIDYA MANDIR, MOUNT ABU"**

Prof. J.L.Mathur
Chairman

Suresh Kothari
Hon'ry Secretary

7-वा-1031
श्री अमरसिंह जी
ए-59, मधु कॉलोनी
नाका मदार, अजमेर-305007

MOUNT ABU-307501 (RAJ.)

Ph. 09214174743,09214673582 (O),09214673627 (H) | avmsvp@yahoo.com | www.adarshvidyamandir.org

स्वात्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,६ हथरोई रोड,जयपुर से मुद्रि
प्रकाशकीय कार्यालय: पाथेय भवन, बी-१६ न्यू कॉलोनी, जयपुर-३०२००१, सम्पादक: कन्हैया लाल चतुर्वेदी
(प्रेषण दिनांक १,२,३,४ व ५ जनवरी २०१५ आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर)